RNI No. 7127/60

डाक पंजीयन संख्या - Jaipur City / 411 2023-25

संघशक्ति

मासिक समाचार पत्रिका

वर्ष : 60 अंक : 01 प्रकाशन तिथि : 25 दिसम्बर कुल पृष्ठ : 36 प्रेषण तिथि : 4 जनवरी, 2023

शुल्क एक प्रति : 15/- वार्षिक : 150/- रुपये पंचवर्षीय 700/- रुपये दस वर्षीय 1300/- रुपये

पूज्य श्री तनसिंह जी

मांझी तुमसे पाया वो सभी अनूठा, मैं ही नहीं अनोखा,
कितने विश्वासों का धनी बना पर, जग से पाया धोखा,
जाने पहचाने तुम, अरमानों में भी तुम, मुझे एकता का अर्थ अब आ ही गया।

श्री क्षत्रिय युवक संघ संस्थापक

पूज्य तनसिंह जी
25 जनवरी, 2023
जयन्ती पर हार्दिक शुभकामनाएं।

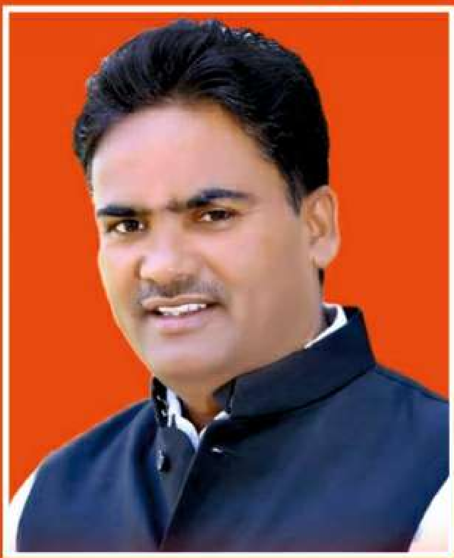

चन्द्रभान सिंह आक्या
विधायक चितौड़गढ़
9413315722

श्री क्षात्रिय युवक संघ संस्थापक

पूज्य तनसिंह जी
25 जनवरी, 2023
जयन्ती पर हार्दिक शुभकामनाएं।

हर्षवर्धन सिंह रूद
चित्तौड़गढ़,
9414733100

श्री क्षत्रिय युवक संघ संस्थापक

25 जनवरी, 2023

पूज्य तनसिंह जी

H.G. INFRA ENGG. LTD.®
WE MAKE PEOPLE MOVE

त्वमेकः सर्व भूतेषु स्थावारेषु चरेषु च ।
परमात्मा पराकारः प्रदीपः नमोस्तुते ।।

एच जी इंफ्रा के समस्त परिवार की ओर से जयन्ती के उपलक्ष्य पर हार्दिक शुभकामनाएं

संघशक्ति

4 जनवरी, 2023

वर्ष : 59 अंक : 01

-: सम्पादक :-

लक्ष्मणसिंह बेण्यांकाबास

शुल्क – एक प्रति : 15/- रुपये, वार्षिक : 150/- रुपये, पंचवर्षीय : 700/- रुपये, दस वर्षीय : 1300/- रुपये

विषय – सूची

☞ नव वर्ष सन्देश-2022	✍	06
☞ समाचार संक्षेप	✍	07
☞ चलता रहे मेरा संघ	✍ श्री भगवानसिंह रोलसाहबसर	10
☞ पूज्य श्री तनसिंहजी (के सम्बन्ध में)	✍ चैनसिंह बैठवास	11
☞ गीता सार	✍ धर्मेन्द्रसिंह आम्बली	13
☞ पृथ्वीराज चौहान	✍ विरेन्द्रसिंह मांडण	16
☞ राणा प्रताप के भाई महाराज शक्तिसिंह के....	✍ अरविन्दसिंह खोड़ियाखेड़ा	18
☞ महान क्रान्तिकारी राव गोपालसिंह खरवा	✍ भँवरसिंह मांडासी	19
☞ रजपूत और रजपूती	✍ दिग्विजयसिंह गोगरिया	22
☞ काइदरा 'कासिंद्रा' का युद्ध: सोलंकी रानी...	✍ नारायणसिंह झाड़ोली	23
☞ मर्यादा के दृष्टिकोण से भगवान श्रीराम और श्रीकृष्ण	✍ डॉ. भंवरसिंह भगवानपुरा	27
☞ कमाई	✍ ईश्वरसिंह ढीमा	30
☞ विचार सरिता (सप्तसप्तति लहरी)	✍ विचारक	31
☞ प्राचीन संस्कृति का वारिस सीमांत क्षेत्रबाड़मेर	✍ जुंजारसिंह, जानसिंहकी बेरी	33
☞ अपनी बात	✍	36

नव वर्ष सन्देश–2022

श्री क्षत्रिय युवक संघ एकमात्र संस्था है जो अपने कार्य को साधना मानता है। इसीलिए बिना शोर–शराबे, शान्त और चुपचाप अपना कार्य 75 वर्ष से कर रहा है। पूरे भारतवर्ष के क्षत्रियों को अपने संगठन के माध्यम से एक जुट करके समाजसेवा, राष्ट्रसेवा ही नहीं अपितु मानव व प्राणीमात्र की सेवा में लगाने का अपने स्वयंसेवकों को प्रशिक्षण देता है। यह संस्था एकमात्र ऐसा संगठन है जो न सरकारों के विरुद्ध है न किसी राजनैतिक दल के विरुद्ध है, न किसी अन्य समान उद्देश्य व मार्ग वाले संगठन के विरुद्ध है।

अपनी सामूहिक संस्कारमयी कर्म प्रणाली द्वारा युवक–युवतियों को भारतीय मूल्यों के आधार पर संस्कारित करने में जुटा हुआ है। व्यवहारिक, चारित्रिक अमृत पान कराता जा रहा है। समाज, राष्ट्र तथा पूरे संसार में कुछ अपसंस्कृतियों द्वारा विषपान करा कर जगत के लिये पतन के गर्त में जाने का अज्ञानपूर्ण कृत्य किया जा रहा है, संघ ने उसके विपरीत बीड़ा उठाया है, अभियान चलाया है। श्री क्षत्रिय युवक संघ निर्भय होकर निरंतर लोक सम्पर्क, लोक संग्रह और लोक शिक्षण द्वारा आसुरी प्रवृत्ति को जड़ से उखाड़ फेंकने का सतत् उपक्रम चला रहा है। अपने मन सहित सभी इन्द्रियों पर नियंत्रण किए बिना यह सम्भव नहीं हो सकता। तदर्थ ऐसा विशेष प्रशिक्षण दिया जाता है। दम्पतियों को संस्कारित किए बिना सन्तान (भावी पीढ़ी) को संस्कारित नहीं किया जा सकता अतएव वह प्रशिक्षण भी चलता ही रहता है।

संस्था के संस्थापक पूज्य तनसिंह जी ने भगवान श्री कृष्ण की गीता को हृदयंगम करके पूरा दर्शन हमें सौंपा है। गीता का उद्घोष –

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे।। 4/8

और

हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्।
तस्मादुत्तिष्ठ कौन्तेय युद्धाय कृतनिश्चयः।। 2/37

क्षत्रिय के लिए रामबाण औषधि है। अपने धर्म व कर्म की रक्षा का एकमात्र उपचार है। आओ हम सभी इस उद्घोष को स्वीकार कर संघ के सततरवें वर्ष में प्रवेश करें तथा परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वह सभी को सुख, शान्ति व समृद्धि प्रदान करे। इति शुभम्।

जय संघ शक्ति।

समाचार संक्षेप

राजपत्रित अधिकारी कार्यशाला :

20 नवम्बर को अशोक क्लब जयपुर में राजपूत राजपत्रित अधिकारियों की कार्यशाला सम्पन्न हुई। इस कार्यशाला में 1100 से अधिक राजपूत अधिकारी पहुँचे। कार्यशाला के लिए पंजीकरण अधिक अधिकारियों ने करवाया था लेकिन उसी दिन आवश्यक राजकीय उत्तरदायित्व निर्वहन करने में व्यस्तता के कारण कुछ अधिकारी नहीं पहुँच सके। कार्यशाला का विषय था 'लोक सेवाएँ, लोकहित एवं नया भारत'।

श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउण्डेशन के तत्वावधान में आयोजित इस कार्यशाला में श्री क्षत्रिय युवक संघ के संरक्षक माननीय भगवानसिंहजी रोलसाहबसर ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि आप लोग अधिकारी का अर्थ जानते ही हैं, लेकिन मैं अधिकारी का मेरा अर्थ आपके साथ साझा करना चाहता हूँ। अधिकारी वह है जो दूसरों के अधिकारों की रक्षा करता है। जो दूसरों को जीवन प्रदान करता है, स्वयं मर कर भी दूसरों को जीवन देता है वह क्षत्रिय है। आपने भी ये बातें सुनी हैं लेकिन हम अपने आपको तोलें कि हम इस राह पर कितने चले हैं। उन्होंने कहा कि भगवान ही हमारा सृष्टा है, भगवान ही हमारा पालनहार है और भगवान ही प्रलय करके इस दुनिया को नष्ट करता है। पर हम बीच में आ जाते हैं कि यह काम तो मैंने किया है। हमारा सोच ऐसा बने कि हमको भगवान ने अधिकारी बनाया, शुभ अवसर प्रदान किया, इसमें हमारा दायित्व क्या है, हमारा स्वधर्म क्या है? अपनी क्षमताओं को नापें और स्वधर्म निभायें। पू. तनसिंहजी ने अनुभव किया कि समाज सो रहा है। जो अपने कर्तव्य के प्रति जागरूक नहीं, वह सो ही तो रहा है। जो अनुभव किया उसी के अनुसार समाज जागरण के लिए उन्होंने कदम बढाये। आज हमने बहुत अच्छे-अच्छे विचार सुने हैं। लेकिन ये सुनने और सुनाने के लिए ही नहीं हैं, इन्हें कार्य रूप में परिणित करना है तभी इस कार्यशाला-आयोजन की सफलता है।

श्री क्षत्रिय युवक संघ के संघप्रमुख श्री लक्ष्मणसिंह जी बैण्याकाबास ने कहा कि क्षात्रधर्म की व्याख्या सभी शास्त्रों में की गई है। गीता के अनुसार 'परित्राणाय साधूनाम विनाशाय च दुष्कृताम' ही क्षात्रधर्म है। साधुजन, अच्छे लोगों की रक्षा व पोषण तथा दुष्ट जनों का संहार यह दायित्व क्षात्रधर्म का है। रक्षा बिना शक्ति के नहीं हो सकती। हम अच्छे विचार रखें, भला सोचें लेकिन शक्ति नहीं है तो न रक्षा हो सकती, न संहार हो सकता। हमारे अन्दर की दुष्प्रवृतियों का संहार भी शक्ति से ही सम्भव है। श्री क्षत्रिय युवक संघ शक्ति का ही निर्माण कर रहा है। शारीरिक बल, साधन बल, बुद्धि बल, भाव बाल जैसे अनेक बलों को संयोजित करने में जुटा हुआ है श्री क्षत्रिय युवक संघ। प्रशासन में आप लोग आए हैं। वह भी एक शक्ति का रूप है। शक्ति का सदुपयोग होना चाहिए, पर शक्ति का दुरुपयोग भी किया जा सकता है। श्री क्षत्रिय युवक संघ अपने अनुषांगिक संगठन श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउण्डेशन के माध्यम से यहाँ यही संदेश दे रहा है कि आपको मिली शक्ति का क्षात्रधर्म के रूप में ही सदुपयोग हो। शक्ति का उपयोग इस प्रकार हो जिससे परिवार, गाँव, राष्ट्र पूरी मानवता को लाभ मिले।

मौसम विभाग के पूर्व महानिदेशक डॉ. लक्ष्मणसिंह ने क्षत्रिय के स्वाभाविक प्रशासनिक गुण जन सेवा में समर्पण की बात बताई। उन्होंने कहा कि क्षत्रिय लोक सेवक सत्य निष्ठा, आचरण के उच्च मानक, निष्पक्षता, कमजोर वर्गों के प्रति सहानुभूति और वस्तुनिष्ठता के सिद्धान्तों का पालनकर्ता के रूप में पहचाना जाता है। फाउण्डेशन के उदेश्य एवं मान्यताओं को यदि लोक सेवक आत्मसात करें तो वे अपने कार्य बेहतर निष्पादन कर सकेंगे। कार्यशाला के

पश्चात अधिकारियों के सहयोग से भविष्य में करणीय पाँच सूत्रीय एजेंडा की विस्तार से जानकारी दी।

सेवानिवृत पुलिस महानिदेशक श्री प्रकाशसिंह ने 'लोक हित में पुलिस व प्रशासन की भूमिका' के विषय में बोलते हुए कहा कि वर्तमान में पुलिस व प्रशासन लोकहित में कितना कार्य कर रहे हैं, यह विचारणीय है। जो अधिकारी वर्ग कभी स्टील फ्रेम कहलाता था, अब वह प्लास्टिक फ्रेम हो गया है। अपनी नौकरी बचाने की बात पहले और कर्तव्य पालन की बात बाद में आती है। यदि हम अपना कर्तव्य पालन करें तो ईश्वर हमारी रक्षा करते हैं, ऐसा मेरा अनुभव है। आज तो अधिकारी नेताओं और राजनैतिक दलों के हित में कार्य कर रहा है, इसीलिए जनता का प्रशासन से मोह भंग हो रहा है। कार्य संस्कृति में जो विकृतियाँ आ गई हैं, उन्हें दूर करना है, इसलिए पहले अपने आप को ठीक करना है। परिवार में अच्छे संस्कार मिलें। विद्यालयों में भी ठीक करने का प्रयास करना है। हमारे संस्कार खो गये हैं। शिक्षा में भी समाज पिछड़ रहा है। संगठित रूप से शिक्षा हेतु कार्य करना होगा। युवा पीढ़ी को खेलों में भी प्रशिक्षित करने की आवश्यकता है।

पूर्व महानिदेशक पुलिस राजस्थान श्री अजीतसिंह ने कहा कि आजकल जब लोग नैतिकता पर बोलते हैं तो काफी खोखला सा लगता है, पर यहाँ आने के बाद फाउण्डेशन के उद्देश्य और उसके द्वारा किये जा रहे प्रयास की जो जानकारी प्राप्त हुई उससे स्पष्ट है कि संघ पूरी तरह से समाज को सुसंस्कारित करने के लिये प्रयासरत है और ये प्रयास रंग भी ला रहे हैं। यह दीर्घकालीन प्रक्रिया है लेकिन समाज में बहुत परिवर्तन आ रहा है। आज प्रशासन के हर कार्य पर सवाल किये जा रहे हैं तो आपकी जवाबदारी भी बनती है। इसमें आपके संस्कार और नैतिकता आपके काम आएगी। आप किसी भी क्षेत्र में हों, आपका राजधर्म निर्धारित है। यदि आप उस राजधर्म का पालन कर रहे हैं तो मैं समझता हूँ क्षात्र पुरुषार्थ फाउण्डेशन के उद्देश्य की पूर्ति होती है। आप ऐसा करेंगे तो वह आने वाली पीढ़ी के लिये प्रेरणा-स्रोत होगा।

सेवानिवृत जनरल दलीपसिंह ने अपने उद्बोधन में क्षात्रधर्म और सेना को ऐतिहासिक रूप से एक दूसरे का पर्याय रहना बताया तथा कहा कि वर्तमान में भी दोनों में सम्मान का भाव विद्यमान है। हमारे समाज से अनेक लोग सेना से जुड़े हैं और वे अपना दायित्व अच्छी प्रकार से निभा रहे हैं। वर्तमान की बदली परिस्थिति में आने वाली चुनौतियों के लिये युवाओं को संगठित कर तैयार करना है ताकि वे सेना में भर्ती होकर देश की सेवा कर सकें।

वरिष्ठ आई ए एस राजेश्वरसिंह ने गीता में बताए गये क्षत्रिय के सात गुणों के परिप्रेक्ष्य में अपने आपको तोलने की आवश्यकता बताई कि उनमें से कितने गुण हमारे भीतर हैं। वे गुण नहीं हैं तो क्षत्रिय कहलाने के अधिकारी कैसे होंगे? हमारा सभी को साथ लेकर चलने वाला समाज है। हम स्वार्थ की बात नहीं करते, सबके हित की बात करते हैं। समाज के कन्धों पर सदैव प्रशासनिक दायित्व रहा है और हमने अपने सुखों का त्याग करके भी दायित्व निभाया है।

पूर्व इनकम टैक्स चीफ कमिश्नर उमासिंह ने कार्यक्रम में नारी शक्ति का प्रतिनिधित्व देखकर प्रसन्नता प्रकट की। बेटी को सशक्त बनाने के लिए माँ के संस्कार और पिता के प्रोत्साहन की आवश्यकता होती है। मेरा समाज से आग्रह है कि बेटियों को सशक्त बनाएँ क्योंकि नारी और पुरुष दोनों के सशक्त होने पर ही समाज सशक्त बनता है। पूर्व न्यायाधिपति करणीसिंह ने समाज में न्यायिक जागरुकता का प्रसार करने की आवश्यकता जतायी। साधनहीन को भी न्याय दिलाना आवश्यक है। डॉ. नरपतसिंह ने 'चिकित्सा : व्यवसाय व सेवा का समन्वय' विषय पर

उद्बोधन दिया। मुख्य अभियन्ता सी पी डब्लू डी पुष्पेन्द्रसिंह ने तकनीकी प्रबन्धन में जन सेवक की भूमिका के बारे में बताया। धर्मवीरसिंह ने 'वित्तीय प्रबन्ध व जागरुकता' विषय पर जानकारी दी। अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक हेमंत प्रियदर्शी ने इस प्रकार की कार्यशालाओं की उपयोगिता पर प्रकाश डाला। महेन्द्रप्रतापसिंह ने प्रारम्भ में भूमिका समझाई।

कार्यक्रम के बाद परस्पर वार्तालाप में लोगों ने इसे समाज में शुभ शुरुआत बताया तो कुछ लोग आश्चर्य करते देखे गये कि कोई ऐसा भी सोच आगे बढा सकता है।

किसान सम्मेलन :

श्री प्रताप फाउण्डेशन के तत्वावधान में किसान सम्मेलन की श्रृंखला में अगला सम्मेलन जोधपुर में 13 नवम्बर को हनुवन्त छात्रावास में सम्पन्न हुआ। कृषि वर्ग से गाँवों में अधिकांश लोग जुड़े हुए होते हैं। अत: यदि ये लोग संगठित रहकर कार्य करें तो गाँवों के विकास में कोई रोड़ा नहीं रह सकता। ऐसे संगठन से गाँव में सौहार्द बनता है और गाँव से गाँव जुड़कर प्रदेश और फिर राष्ट्र में सौहार्द पनप सकता है। संगठन किसानों की समस्याओं के समाधान के लिए भी आधार बनता है। गाँव की सभी जातियों की भागीदारी ऐसे सम्मेलनों में परस्पर विश्वास को पनपाती है और निकटता बढकर संगठित होते हैं।

क्षत्रिय युवक संघ के संरक्षक माननीय भगवानसिंह जी ने ईशोपनिषद के प्रथम मंत्र के साथ समझाया कि जो कुछ ईश्वर ने दिया है उसका सदुपयोग करें, भोग नहीं, सदुपयोग करें। ईश्वर ने हमको शरीर दिया है, मन दिया है, बुद्धि दी है, चित्त दिया है, अहंकार दिया है, इन्द्रियाँ दी हैं, इनका सदुपयोग करें। सोने से पहले थोड़ा विचार करें कि आज मैंने सदुपयोग में क्या कमी रखी। कमी हो तो वह पाप है और पाप करेंगे तो एकता नहीं होने वाली। इसलिए मैं तो कहता हूँ कि एक बनो पर नेक बनो। आप सब ने आशा प्रकट की है कि अब सब काम सही तरह से होंगे। लेकिन एकता का कार्य सरलता से होने वाला नहीं है। परन्तु शुरू किया हुआ काम कभी खत्म नहीं होता। भगवान श्री कृष्ण ने गीता में कहा है कि बीज का नाश नहीं होता। बीज डाल दिया गया है, अब इसे पूरे भारतवर्ष में फैलाएँ। बहुत सी रूढियाँ हमारे अन्दर घुस गई है। जातिवाद ज्यादा फैला है। जातियाँ पहले भी थी, आज भी हैं और आगे भी रहेंगी। उन्हें समाप्त नहीं करना है पर जातिवाद समाप्त करना है। हम संयमी बनें, अच्छा बोलें, जो बोलें वह करें। रोग बहुत गहरा है, हटाने में समय लगेगा लेकिन साथ बने रहें तो काम अवश्य होगा। कृषि भूमि की उर्वरा शक्ति बनाये रखने की भी चर्चा आई।

प्रारम्भ में सम्मेलन की भूमिका बताई गई। माँग पत्र का ज्ञापन तैयार किया गया। सर्वश्री दिनेश चारण, गुमानाराम देवासी, तुलछाराम सिंवर, कालुराम भील, सलीम खाँ मौलवी, देवीसिंह राजपुरोहित, मानाराम गर्ग, कल्लाराम पटेल, बाबूलाल पंवार, बलदेव विश्नोई, नागराज गोस्वामी, खिंवराज जांगिड़, खुशालाराम मेघवाल, शशी प्रकाश प्रजापत आदि ने सम्मेलन को संबोधित किया और विभिन्न समस्याओं की चर्चा की।

संघ समाचार :

दिसम्बर माह के प्रसारित शिविरों के अतिरिक्त स्नेह मिलन, अधिकतम संख्या दिवस, अनुषांगिक संगठनों की कार्यशालाएँ, कैरियर काउंसलिंग आदि कार्यक्रम भी सम्पन्न हुए।

संघ संस्थापक पूज्य तनसिंहजी का निर्वाण दिवस 7 दिसम्बर को अनेक-अनेक स्थानों पर मनाया गया। राजस्थान, गुजरात के अलावा अन्य प्रदेशों में भी कुछ जगह कार्यक्रम सम्पन्न हुए।

चलता रहे मेरा संघ

{उच्च प्रशिक्षण शिविर आलोक आश्रम बाड़मेर में 25 मई, 2022 को माननीय संरक्षक श्री भगवानसिंह जी रोलसाहबसर द्वारा प्रदत्त प्रभात संदेश}

भूतानां प्राणिनः श्रेष्ठा प्राणिनां बुद्धिजीविनः।
बुद्धिमत्सु नराः श्रेष्ठा, नरेषु क्षत्रियाः स्मृताः।।
– मनुस्मृति

भूतानां, जितने भी प्राणी हैं उनको आध्यात्मिक भाषा में भूत कहा जाता है और प्राणी नहीं है उनको भी भूत कहा जाता है। भूत में जो इस संसार में धीरे-धीरे रूप बदलते हैं, चाहे पहाड़ हों, चाहे रजकण हों, उन सबसे श्रेष्ठ हैं प्राणी। प्राणी जो प्राणवान हैं। ये अपनी भावनाओं को विभिन्न रूप से व्यक्त कर सकते हैं; वे चाहे पशु हों, चाहे पक्षी हों, चाहे पेड़ हों, चाहे पौधे हों। हम उनके द्वारा व्यक्त भावना को समझें नहीं, अलग बात है। इन प्राणियों में बुद्धिमान श्रेष्ठ हैं और बुद्धिवानियों में, बुद्धिमान प्राणियों में मनुष्य श्रेष्ठ है। मनुष्यों में क्षत्रिय श्रेष्ठ है ऐसा महाराज मनु ने इस श्लोक के माध्यम से बताया है।

सृष्टि के आदिकाल से ही विकास की परम्परा चल रही है। कोई धीमे चलता है, कुछ की गति ठीक होती है तो कुछ तीव्र गति से विकास की ओर बढते हैं। हम यहाँ श्रत्रिय युवक संघ के शिविर में ये सारी बातें समझने के लिये आए हैं कि कोई श्रेष्ठ क्यों है? श्रेष्ठ वह है जो लेता है और देता भी है। ये पत्थर, ये रजकण हमारे कितने काम आते हैं। ये हमसे लेते कुछ भी नहीं हैं, लेते हैं तो प्रकृति से लेते हैं, लेकिन देते बहुत कुछ हैं। तो सारा खनिज श्रेष्ठ है। उनसे श्रेष्ठ ये पेड़-पोधे हैं जो हवा लेते हैं, पानी लेते हैं-सब प्रकृति से लेते हैं, लेकिन देते हमको हैं। छाया देते हैं, फल देते हैं, ऑक्सीजन देते हैं। तो जो जितना देता है, उतना ही श्रेष्ठ है।

जो इस बात को समझता है, उसको हम उत्तरदायी कहते हैं। वह अपने उत्तरदायित्व को समझता है। हम इस थोड़ी सी देर में यह समझ लें कि श्री क्षत्रिय युवक संघ में आकर हम हमारे उत्तरदायित्व को पहचाने और उसे पूरा करें। समझें कि कौम के प्रति हमारा क्या दायित्व है, हमारे गाँव के प्रति क्या उत्तरदायित्व है, हमारे माता-पिता, हमारे अध्यापकों के प्रति हमारा क्या उत्तरदायित्व है? हमारे समाज के प्रति, हमारे राष्ट्र के प्रति, इंसानियत के प्रति हमारा क्या उत्तरदायित्व है उसे समझें और विचार करें कि क्या हम वह दायित्व निभा रहे हैं? हम अपना दायित्व निभायेंगे तभी हम श्रेष्ठ कहे जाएँगे, इंसान कहे जाएँगे, मानव कहे जायेंगे। यदि दायित्व नहीं निभा रहे हैं तो केवल जन्म क्षत्रिय के घर में लिया है। अपना दायित्व समझें नहीं और निभायें नहीं तो मात्र जन्म क्षत्रिय के घर में लेने मात्र से हम श्रेष्ठ नहीं हो गये।

आप पति हैं लेकिन पति के दायित्व का निर्वहन नहीं करते हैं, आप पिता हैं और पिता के दायित्व का निर्वहन नहीं करते हैं, आप विद्यार्थी हैं और विद्याध्यन का दायित्व जो आपका है उसका निर्वहन नहीं करते हैं, अध्यापक जो पढाता है वह यदि ढंग से नहीं पढ़ाता है तो चाहे विद्यार्थी से आयु में बड़ा हो और अधिक पढा हुआ हो, उसने अपने उत्तरदायित्व को नहीं पहचाना, उस पर दायित्व का कर्जा है इस बात को नहीं जाना तो वह कृतघ्न कहलाता है। वह अपना कर्जा कैसे उतारेगा, अध्यापक बनाकर उस पर जो उपकार किया गया उससे उऋण वह कैसे होएगा, ऐसा चिंतन यदि उसका नहीं है तो वह श्रेष्ठ नहीं है। हम एक बहुत अच्छी संस्था में संस्कार निर्माण, चरित्र निर्माण करके अपना कल्याण करके राष्ट्र के कल्याण के मार्ग में लगे हुए हैं, इंसान की सेवा में लगे हुए हैं। हम परमपिता परमेश्वर से यह प्रार्थना करें कि वे हमें धैर्य, शक्ति और साहस दें जिससे कि हम अपने उत्तरदायित्व को समझकर सच्चे क्षत्रिय बन पाएँ। आज के मंगल प्रभात में श्री क्षत्रिय युवक संघ की ओर से हमको यही मंगल संदेश है। ●

गतांक से आगे

पूज्य श्री तनसिंहजी (के सम्बन्ध में)

''जो कुछ देखा, समझा व अनुभव किया''

– चैनसिंह बैठवास

श्री क्षत्रिय युवक संघ के संस्थापक व हमारे जीवन के प्रेरक सम्बल व मार्गदृष्टा पूज्य श्री तनसिंह जी का ननिहाल तथा पूज्य श्री तनसिंहजी की जन्मदात्री माँ व हमारे पूज्या माँसा मोतीकंवर जी का पीहर बेरसियाला होने से हम लोगों का इस गाँव से विशेष लगाव व आकर्षण है। यह गाँव, इस गाँव की भूमि हमारे लिये तीर्थस्थल है।

बेरसियाला सोढा बैरसी नारणोत के वंशजों का गाँव है। रतोकोट के राणा नारायणसिंह के पुत्र बैरसीजी से सोढा राजपूतों में बैरसी सोढा (बैरसिंहोत सोढा) शाखा पृथक हुई। राणा नारायणसिंह के बाद वंशानुगत राणांप की पदवी बैरसीजी को दी गई जो बाद में रतोकोट के महंतों (मठाधीशों) को संकल्पित की गई। इसी कारण बैरसी जी के वंशजों द्वारा परम्परागत रूप से ख्याला मठ के गादीपति महंत को मुख्य मेले के अवसर पर मुकुट पहनाया जाता है। बैरसी जी के तीन पुत्रों की जानकारी मिलती है– जीवणो जी, मेघजी और बाघजी। नैणसी री ख्यात में एक अन्य रामा (रामसिंह) नाम भी मिलता है। इनकी जागीरी में 7 (सात) गाँव थे। जिनमें जीणार, राणाऊ, राड़/मऊ, राबलाऊ आदि प्रमुख थे। जीवणो जी ने जीणार गाँव बसाया। जीवणो जी बैरसिंहोत के वंशज बेरसियाला, रावतरी, चौक, रेंवतसिंह की ढाणी (जैसलमेर), सुबाला, तिबनियार, दानजी की होदी (बाड़मेर), गिरादड़ा (पाली) तथा जीणार, राणाऊ, राड़ (मऊ), राबलाऊ, फिलाऊ (सिन्ध–पाक) में निवासरत है। जीवणो जी बैरसी के वंशजों के बारे में यह दोहा लोक प्रचलित है –

बेरागर रे जीवणो हुओ, जीवण रे गज थाट।
गजे रे कुशलो हुओ, राणिया जल्मया सब राव।।

मेघजी बैरसिंहोत के वंशज बैरसियाला, म्याजलार, रेंवतसिंह की ढाणी (जैसलमेर), हाथीतला, उगेरी (बाड़मेर) में रहते हैं। बाघजी बैरसिंहोत के वंशज बैरसियाला, म्याजलार, रेंवतसिंह की ढाणी (जैसलमेर) में रहते हैं।

जीवणो जी के पौत्र शिभराजसिंह मेहराजसिंहोत के पास एक मांणकी नामक देवनीक तलवार थी। जिसके बारे में कहा जाता है कि युद्ध के दौरान वह अपनी लम्बाई से भी दुगुनी हो जाती थी तथा उसका वार कभी खाली नहीं जाता था। वह तलवार आज भी उनके वंशजों के पास सुरक्षित है। मांणकी तलवार के बारे में स्थानीय स्तर पर यह दोहा प्रचलित है –

रूठी करे न मांणकी, तुठी करे न घाव।
शिभराज ठकुर तुझे, ताले उठायो ताव।।

कालान्तर में बदलती हुई परिस्थितियों के कारण बैरसी जी के वंशज अपने मूल वतन जीणार, राणाऊ, राड़ (सिन्ध–पाक) आदि जागीरों से पलायन कर जैसलमेर रियासत में कुछ समय तक म्याजलार व धनोली में आकर रहे तथा तत्पश्चात् बैरसियाला गाँव बसाया।

बैरसियाला गाँव जैसलमेर से दक्षिण–पश्चिम दिशा में लगभग 75 किलोमीटर दूर रेतीले धोरों के बीच आया हुआ है। इस गाँव का नाम पहले सूंजो था। सूजो नाम से खड़ीन के कारण इनका नाम सूंजो पड़ा है। सूंजो गाँव विछणाई तालाब से पूर्व दिशा में टीले पर था, जहाँ पर आज भी उनके रहवासियों के मिट्टी के बर्तन आदि

मिलते हैं। वर्तमान बैरसियाला गाँव 1886 ई. में बैरसी सोढाओं द्वारा बसाया गया। बैरसियाला की विछणाई तालाब के उत्तरी किनारे पर एक सुन्दर गोवर्धन स्तम्भ खड़ा है। सूर्य, शिव, गणेश, विष्णु आदि देव मूर्तियों से सुसज्जित और देवनागरी लिपि में लिखे 817 साल पुराने इस शिलालेख में कुल 13 पंक्तियाँ हैं। इसमें देव स्तुति के बाद 'गुहिल...हरमद द...संवतु 582 भाटेके स...सुदि 2 गुरु मंत्र दिने रावल कीलणात राज्येदेठिक वर्दिण क हणलष...' उपर्युक्त विवरण के अनुसार यह भट्टिक संवत् 582 यानी 1205 ई. का शिलालेख है, जो जैसलमेर के महारावल कालण जी (इस गोवर्धन स्तम्भ में रावल कीलण नाम लिखा गया है) के समय का है।

शिलालेख में गुहिल शब्द स्पष्ट लिखा है तथा बाद में कुछ अक्षर घिस जाने से अपठनीय है, फिर हरमद नाम पढने में आता है। इस आधार से लगता है कि इस जलाशय का निर्माण जैसलमेर के रावल कालण (कीलण) के राज्यकाल में गुहिल हरमद द्वारा करवाया गया था। इससे लगता है कि यहाँ पहले गुहिल रहते होंगे।

जानरा स्थित श्री मालण माता मन्दिर के पास पड़े असंख्य देवलियों में भाटिके 691 यानी 1314 ई. का एक मूर्तिलेख में गुहिल करमदे का नाम उत्कीर्ण है जो इस क्षेत्र में गुहिलों के होने की पुष्टि करता है।

उसके बाद इस क्षेत्र में सोलंकी वंश के आधिपत्य के प्रमाण मिलते हैं। सूंजो खड़ीन के कुए के दक्षिण-पूर्व में खड़ा गोवर्धन स्तम्भ में भाला लिए एक घुड़सवार योद्धा की मूर्ति है जिस पर ''ओम गणेशाय नमः संवत् 1504 वरिषे माह सुदि 10 सोमवारे रोहिणी नक्षत्रे भा........बालचंद्रत्मजा हरीया सोलंकी सिनाड़त्र.... दुलहदेवा आणि....काषातह्रे द्विसगगत सत त्रीवरे सीह सु (भ) भवतु।'' लिखाहै। इस शिलालेख से प्रमाणित होता है कि यहाँ विक्रम संवत् 1504 (1447 ई.) में हरीया नामक सोलंकी देवलोक हुआ है। इससे इस मंत्र पर 1447 ई. से सोलंकी राजपूतों के अधिकार होने की पुष्टि होती है। कुए के पास एक अन्य मूर्ति लेख में संवत् 1706 वरषे स्रावण मासे सक.....गत लिखा है। आज भी यदाकदा यहाँ खेत के धोरों व नाडी-टोनो में सोलंकिया के शिलालेख मिल जाते हैं। तवारिख जैसलमेर के अनुसार परबत भाटियों से पहले यह जमीन सोलंकियों की थी, जिसे विक्रम संवत् 1918 (1861 ई.) में जैसलमेर के भाटी शासकों ने खालसे कर दी।

सोलंकियों द्वारा सिन्ध के तोडो तुरकणी के निवासी ईसा खाँ आलीसर नामक मुसलमान की विवादवश हत्या कर दी थी। इसके वैर में ईसा खाँ की माँ ने सिन्ध से मुसलमानों का एक कटक (धाड़ेतों का दल) लाकर प्रातः सूर्य भगवान को अर्क देते समय अचानक हमला कर सोलंकियों को मार दिया। सोलंकियों का एक लड़का जो अपने ननिहाल में रहने से बच गया था, बड़ा होने पर वह अपने मामा परबत भाटी जीवराज जी (जो डेढा व मुहार खड़ीन के पास रहते थे) को लेकर आया। परबत जीवराज ने दरबार में हकदारी पेश कर अपने नाम सूंजो गाँव लिखवाया। लेकिन परबत भाटियों की भी यहाँ वंश वृद्धि नहीं हुई जीवराज के हठेसिंह हुआ। हठेसिंह के पुत्र रावतसिंह, रावतसिंह के एक पुत्र अचलसिंह तथा पुत्री हरूकँवर थी। परबत रावतसिंह हठेसिंहोत परिवार के पास यह क्षेत्र रहा। रावतसिंह का पुत्र अचलसिंह कान जी का गोल (छह-तालाब-फुलिया) के पास असामयिक देवलोक हुआ। तब रावतसिंह की विधवा रतनकंवर (केलण सोढी) ने सूंजो की जमीन अपने जंवाई कानसिंह को देनी चाही लेकिन कानसिंह ने जमीन शुभ न होने (सोलंकियों व परबत भाटियों की वंश वृद्धि नहीं होने के कारण) का कहकर

(शेष पृष्ठ 15 पर)

गीता सार

– धर्मेन्द्रसिंह आम्बली

धृतराष्ट्र उवाच :

धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः।
मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत सञ्जय।।

श्रीमद् भगवद् गीता में 750 श्लोक हैं। सोचने की बात है कि जीवमात्र के लिए कल्याणकारी, इतना पवित्र, भगवान श्रीकृष्ण के मुखारविन्द से निसृत वाणी के इस महान ग्रंथ की शुरुआत एक अंध धृतराष्ट्र से क्यों? इसमें भी रहस्य है। आधा-अधूरा व्यक्ति ही हमेशा ज्यादा बोलता है। बाकी जितने महान व्यक्ति, इतनी वाणी कम और कर्म ज्यादा रहता है। अंध प्रवृति की मोह माया में फंसा है। मोह रूप दुर्योधन में लिप्त अंध धृतराष्ट्र (जिसका राज्य हरा जाने की सदैव आशंका है) प्रथम बोलता है। महान व्यक्ति केवल प्रश्नों के उत्तर देते हैं। उपनिषद का एक मंत्र है–'संपूर्ण कुंभो न करोति शब्दम्, अर्धो घटो घोषमुपथतिजूनम्। प्राशः कुलिनो न करोति गर्वम् गुणविहीनाः बहु वदन्ति।' अर्थात् पूरा भरा हुआ घड़ा (बड़बड़) आवाज नहीं करता लेकिन आधा भरा घड़ा बड़बड़ आवाज करता है। ज्ञानी कुलवान व्यक्ति ज्यादा नहीं बोलता है किन्तु गुणविहीन (मूर्ख) ज्यादा बोलता है।

यहाँ प्रथम मंत्र में 'धृतराष्ट्र उवाचः' कहते ही भास होता है कि यह भगवान श्रीकृष्ण सिद्ध करते हैं कि मूर्ख बिना सोचे समझे बोलता ही रहता है। गीता के अनुसार 'वासुदेव सर्वम्' सभी चराचर में, अणु-अणु में ईश्वर है तो मेरा और तेरा कहाँ से आया? इशावास्योपनिषद् का मूलमंत्र यही है–

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किंच जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुंजिथाः मा गृधः कस्यस्विद्धनम्।।

अर्थात् संपूर्ण ब्रह्माण्ड में व्याप्त सभी (जड़ चेतन) इस जगत में है वो ईश्वर का निर्मित है, उसे त्याग कर भोगो उस पर गिद्ध दृष्टि न रखें। जो 'त्यागे सो आगे'। जो जितना देता है, उतना ही पाता है। लेकिन यहाँ देने की नहीं लेने की वृति बनी हुई है। इसीलिए अंधा सबसे अपने बचाव में पहले बोलता है। क्योंकि जो शुद्ध है, प्रबुद्ध है, उसको अपने कर्म पर भरोसा रहता है। 'शिव का दास कभी न उदास' जो सभी का कल्याण देखता है उसे कुछ खोने का डर भी नहीं और गम भी नहीं है। डरता वही है जो कुछ अच्छा कर्म नहीं करता।

ऐसे तो इस संसार को 'आशाश्वतम् दुःखालयम्' कहा गया है क्योंकि गीता में कहा है–'नासतो विध्यते भावो, ना भावो विध्यते सत्'। सत्य का तीनों लोकों में अभाव नहीं है और अभाव (प्रकृति) का कहीं अस्तित्व नहीं है। सत्य तो है ईश्वर, जो अजर, अमर, शाश्वत, अविनाशी है। जो चराचर में व्याप्त है। और जो साथ-साथ अगोचर भी है। जबकि जो गोचर है वह प्रकृति सदैव क्षण-क्षण में नाशवंत है। इस सत्य पर जिसे भरोसा नहीं और असत्य जड़ प्रकृति में भरोसा है वह थोड़ी-सी बात छेड़ने में पहले ही बोलता है।

एक दार्शनिक के मत के अनुसार यह प्रकृति ईश्वर निर्मित एक प्रदर्शन है। जिसे हम जी भरकर देख तो सकते हैं लेकिन उसको हाथ लगाने में दण्ड भुगतना पड़ता है। यह सारी प्रवृति हमारे सदुपयोग के लिये है न कि उपभोग के लिये। जहाँ आकार, वहाँ विकार और जहाँ आकृति वहाँ विकृति। आकार और आकृति प्रकृति गत पदार्थों की होती है। ईश्वर सत्य

है, निराकार, निराकृति है इसलिए निर्विकार और निर्विकृति सदैव है।

कोई प्रथम मंत्र पढकर निराश न होवे क्योंकि हम सभी जीव थोड़े बहुत धृतराष्ट्र के विचार के ही हैं। यहाँ आँख से अन्धा ही नहीं बल्कि अज्ञान रूप अंधकार में घिरा अंधा है। प्रकृति की चकाचौंध में लिप्त होने से अंधा है। इसीलिए तो सगे अनुज भ्राता पांडु के पुत्रों को अपना नहीं समझकर गैर मानता है, इस बात का सबूत इस मंत्र में है। यहाँ अन्धा कहता है-मेरे (मामका) और पांडु पुत्र ने क्या किया? यह अपने पराये का भाव पनपा, वहाँ युद्ध शुरू हो गया। श्रीरामचरितमानस में तुलसीदासजी कहते हैं-'मैं अरु मोर, तौर ते माया' मैं और मेरा और तू और तेरा की बात ही द्वन्द्व का दर्शन करवाती है। यह सब माया है। सभी में ईश्वर देखने वाले का इस संसार में द्वन्द्व है ही नहीं। तब मेरा-तेरा की बात ही नहीं।

मेरे विचार के अनुसार चर्म चक्षु से अंधा नहीं है। तभी तो बोलता है-धर्मक्षेत्र-कुरुक्षेत्रे। यह अंधा अज्ञान से है। धर्मक्षेत्र अर्थात् सत्य कार्य का बाहुल्य है और कुरुक्षेत्र से तात्पर्य है, कुछ करने का आदेश जो प्रकृति में करने का निर्देश है। प्रकृति में जीवन भर करके, कुरुक्षेत्र में कितना भी करके अगर धर्मक्षेत्र में कुछ नहीं किया तो परिणाम शून्य है। वही आवागमन रहेगा- 'पुनरपि जननम् पुनरपि मरणम् पुनरपि जननि जठरे शयनम्'। पुण्यमयी प्रवृत्तियों का बाहुल्य ही धर्मक्षेत्र है और पापमयी प्रकृति ही कुरुक्षेत्र है। इसीलिये इस धृतराष्ट्र को मालूम तो है कि धर्मक्षेत्र क्या है और कुरुक्षेत्र क्या है। लेकिन कुरुक्षेत्र में (माया में) फंसे धृतराष्ट्र ने मेरे और पांडु की संतान ने युद्ध में क्या किया यह बात संजय को पूछी है। संयम ही संजय है। प्रकृति में रहते हुए भी जो मन, इन्द्रियों पर संयमपूर्वक वर्तता है वह संजय है। वह संयमी व्यक्ति ही धर्मक्षेत्र, कुरुक्षेत्र का भेद जान सकता है। उसे ही ईश्वर कृपा से दिव्य दृष्टि मिलती है। तभी तो अज्ञान और माया से अंधा जिसे सत्य (ईश्वर) पर भरोसा नहीं, वह संयमी पुरुष रूप संजय को पूछता है।

अज्ञान मन से आवृत धृतराष्ट्र संयम रूप संजय को पूछता है कि 'धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे' (धम कार्य करने का जहाँ क्षेत्र है) मेरे और पांडु पुत्रों ने क्या किया? हमने धर्मक्षेत्र को समझा, अब कुरुक्षेत्र के बारे में भी समझेंगे। कुरुक्षेत्र ऐसा क्षेत्र जहाँ प्रत्येक मनुष्य को कुछ करना है। तभी तो भगवान ने कहा है कि 'नियत कर्म कुरुत्वम्' निश्चित किया हुआ कर्म कर। मनुष्य जन्म के साथ ईश्वर, प्रेषित एक ही कार्य निश्चित है, वह है निष्काम भाव से ईश्वर स्मरण। लेकिन ईश्वर का कहा न करके अपनी मनमानी करना अच्छा लगता है, वही कुरुक्षेत्र है जहाँ आजीवन घमासान युद्ध चलता रहता है।

क्षेत्र वो ही है जहाँ दसों इन्द्रियों और अन्त:करण (चातुष्ट्य) (मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार) का क्षेत्र है। धर्मक्षेत्र सिर्फ ईश्वर का ध्यान है। कुरुक्षेत्र स्थान को ढूंढ़ा जा रहा है पर स्वयं भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में बताया है÷'इदं शरीर कौन्तेय क्षेत्रमित्यभियते' यह मानव शरीर ही एक कुरुक्षेत्र है। जिसमें दो प्रकार की प्रवृति विद्यमान है-देवी संपद और आसुरी सम्पद। पांडु की संतान और धृतराष्ट्र की संतान। सजातीय और विजातीय प्रवृति। जो इस क्षेत्र को जान लेता है वह क्षेत्रज्ञ है। जब तक विकारमय जीवन है, प्रकृतिगत जीवन है तब तक अंश है और उसे अच्छी तरह जानकर उसी से परे हो जाते हैं, वो अंशी है। यह युद्ध कोई बाहर का नहीं, हमारे शरीर और मन में संघर्ष का ही युद्ध है। जीवन भर जो इस क्षेत्र में ही फंसा रहता है उसके जीवन में कुरुक्षेत्र सदैव मंडराता रहेगा

और जो कुछ करके उस क्षेत्र से पर (ऊपर) उठता है, वह धर्मक्षेत्र में प्रवेश पाता है। इसीलिए किसी भजनकार ने लिखा है-'मनुष्य जन्म अनमोल रे, उसे मिट्टी में न घोल रे, अब जो मिला है, फिर न मिलेगा, कभी नहीं, कभी नहीं, कभी नहीं रे।'

मेरे मानस से तो गीता के प्रथम अध्याय के प्रथम मंत्र के प्रथमाक्षर और अट्ठाहरवें अध्याय के अंतिम मंत्र के अन्तिम शब्द (गीता का अन्तिम शब्द) को जोड़ दें तो सारी गीता का सार आ जाता है। धर्मक्षेत्र+मतिर्मम के अनुसार अगर हमारी गति धर्मक्षेत्र में लग जाए तो कुरुक्षेत्र में रहते हुए भी, युद्ध लड़ते हुए भी हम सदैव विजय प्राप्त कर सकेंगे। बस शर्त इतनी सी है कि हमारी मति सदैव धर्मक्षेत्र में रहे। सारी गीता का सार यही तो है। धर्मक्षेत्र में पांव धरने से मनुष्य पिछड़ता नहीं है। परमात्मा को पा ही लेता है, चाहे कुछ जन्म लगें। जबकि कुरुक्षेत्र में फंसे हम चक्रव्यूह में ऐसे फंसते हैं कि अनेक-अनेक जन्मों के बाद भी वहीं रहते हैं जहाँ से हमारी शुरुआत हुई थी। बुद्धिवान, ज्ञानवान मनुष्य इस कुरुक्षेत्र और धर्मक्षेत्र का भेद समझकर धर्मक्षेत्र को पार कर लेता है। और रामचरित मानस के अनुसार 'भजत तुम्हहिं तुम्हहीं हो जायी'। चारों प्रकार के मोक्ष प्राप्त कर लेते हैं।

पृष्ठ 12 का शेष

पूज्य श्री तनसिंहजी (के सम्बन्ध में)

लेने से इन्कार कर दिया। तब रतनकंवर ने विक्रम संवत् 1941 (1884 ई.) में जमीन दरबार बेरिसाल जी को खालसे करवा दी। उसके बाद सूंजो गाँव दो वर्ष तक खालसे रहा।

1885 ई. में महारावल बेरिसाल जी ने राजवी शिवदानसिंह ओनाड़सिंहोत के अनुरोध पर बैरसी सोढाओं को परबत भाटी की भूमि उन्हें बख्शीश में दी। राजवी शिवदानसिंह अनाड़सिंहोत सोढा बैरसी हयातसिंह के दौहित्र थे। महारावल बेरीसाल जी की आज्ञा प्राप्त कर बैरसी सोढा रतनसिंह जी रा में महादानसिंह रावसिंहोत तथा हयात जी रा में पूंजराजसिंह व अन्य भाइयों ने 1886 ई. में विछणाई तालाब के दक्षिण में 4-5 किलोमीटर दूरी पर 52 पुरुष (लगभग 300 फीट से ज्यादा) बैतीणा (दो तरफ से पानी सींचने वाला) कुआं खुदवाया। जो प्रारम्भ में बैरसी आला कुआ नाम से जाना जाता था। बाद में आबादी बढने पर यह गाँव बैरसियाला के नाम से प्रसिद्ध हुआ। **(क्रमशः)**

शिविर-सूचना

प्रा.प्र.शि. - 13 जनवरी, 2023 से 15 जनवरी, 2023

स्थान - अमृत धाम आश्रम, हैदराबाद

सम्पर्क सूत्र - गोपालसिंह चारणीम - 9949899208

गोपालसिंह भियाड़ - 9393398120

नवम्बर अंक से आगे

पृथ्वीराज चौहान

– विरेन्द्रसिंह मांडण (किनसरिया)

गोरी नाम का तूफान : भाग–1

वीर शिरोमणि पृथ्वीराज चौहान के राजनैतिक उभार के साथ-साथ मोहम्मद गोरी के क्रियाकलापों पर दृष्टि रखना आवश्यक है।

सुलतान महमूद के बाद 12वीं सदी में गजनवी वंश धीरे-धीरे अवनति को जा रहा था। माँस के लोथड़े की जो स्थिति उसके लिये लड़ते लकड़बग्धों और श्वानों के झुण्ड के बीच होती है, खुरासान (अफगानिस्तान) की भी बंजारे लड़ाकू कबीलों के बीच वही स्थिति हो गयी। इन्हीं में से एक ईरानी-ताजिक मूल का शंसब' आनी परिवार। उत्तरपश्चिमी अफगानिस्तान (गोर प्रान्त) में फिरोजकोह (वर्तमान चगचरां) के छोटे से कबीला-प्रमुख के परिचय से उठते हुए घियासुद्दीन शंसब' आनी ने गोर का सुल्तान बनने के बाद 1160 के दशक में स्थानीय प्रतिद्वंदियों को एक-एक कर ध्वस्त किया। फिर 1173 ई. में घियासुद्दीन गोरी ने गजनी में कुछ वर्ष पहले घुसे उत्तर के गुज तुर्कों से गजनी भी छिन लिया। उसी वर्ष सबको चौंकाते हुए घियासुद्दीन ने 24 वर्षीय अपने छोटे भाई शहाबुद्दीन गोरी को गजनी प्रान्त का शासक बना दिया[1]। यानी मोटे तौर पर उत्तर और पश्चिम (सेल्जुक, ख्वारिज्मी आदि की ओर) बड़े भाई के पास, तो पूर्व और दक्षिण (बाकी खुरासान व भारत की ओर) के मामले छोटे पर[2]। अन्तिम गजनवी शासक खुसरो मलिक तो सेल्जुक और अफगान-ताजिक कबीलों के तीन तरफा दबाव से 1161 ई. में ही गजनी छोड़ अपने राज्य के पूर्वी छोर लाहौर में जा बसा था। यूँ तो खुसरो मालिक लाहौर से पंजाब को दृढ़ता से दबाये बैठा था, पर खुरासान में अब गोरियों का डंका बज रहा था। पश्चिम में कोई संभावना न देख गजनवी अब लाहौर से पूर्व और दक्षिण में मुख्य भारत की ओर बढ़ने के सतत प्रयास करने लगे।

1175 ई. में शहाबुद्दीन गोरी गोमल दर्रे से पंजाब में उतरा। गोरी गोमल को खैबर और बोलन दर्रों से अधिक सुरक्षित और छोटा रास्ता मानता था। पंजाब में उसने सबसे पहले मुल्तान[3] में सदियों से बैठे करामित नामक अरब मूल के कबीले को परास्त किया। इसके बाद उसी वर्ष उच्छ[4] भी गोरी ने हथिया लिया। उच्छ की सत्ता कुछ विद्वान अरब कबीलों के अंतर्गत तो कुछ भाटियों के अधिकार में बताते हैं। 1178 ई. में 29 वर्षीय गोरी ने भारत की ओर फिर से अभियान छेड़ा। तब की राजनैतिक स्थिति भी रोचक व संयोग-जन्य है। उत्तर-पश्चिम भारत के कई राज्यों में अवयस्क राजा सिंहासन पर थे। जैसे अजमेर में 15 वर्षीय पृथ्वीराज और अन्हिलवाड़ में उनसे भी छोटे मूलराज द्वितीय। दोनों तब अपनी माताओं के मार्गदर्शन में थे।

इस अभियान के लिये गोरी मुल्तान से निकला तो उसका पहला पड़ाव लोद्रवा/लुद्रवा में हुआ, जो तब यदुवंशी भाटी राजपूतों की राजधानी थी। ये पृथ्वीराज के पश्चिमी पड़ोसी तो थे ही, गजनी के प्राचीन शासक भी बताए जाते हैं[5]। सो यहाँ भाटियों पर कुछ शब्द लिखना प्रासंगिक होगा। मध्यकाल का सार देखें तो इस्लामी शक्तियों से भाटियों के सम्बन्ध मिश्रित रहे। 12वीं सदी के अन्त तक भाटियों ने गजनवी, करामित, गोरी आदि कई इस्लामी शक्तियों से सफलता पूर्वक लोहा लिया। विजयराज लांजा भाटियों के बहुत शक्तिशाली अधिनायक रहे जिनकी उपाधियाँ 'परमभट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर' आदि थी। विजयराज लांजा ने विवाह के समय अपनी

परमार (आबू राज्य की) सास को उत्तर के भड़किंवाड़ (रक्षक) होने का वचन दिया था[6]। भाटियों के उच्छ हारने के आसपास ही विजयराज का भी परलोक गमन हुआ (1175 ई.)[7]।

भाटियों की राजधानी लोद्रवा एक व्यापारिक केन्द्र होने से धनाढ्य और इसी कारण इस्लामी लुटेरों के लिए चुम्बक के समान थी। गोरी के 1178 ई. के अभियान के समय विजयराज के अवयस्क पुत्र भोजदेव भाटियों के रावल थे। भाटी राज्य मार्ग में पड़ता था सो शहाबुद्दीन ने पहले भोजदेव को सन्देश भिजवाया कि-मेरे अभियान की सूचना आगे मत पहुँचाना, हमें अपने इलाके से निकलने दो तो तुम्हें नुकसान नहीं करेंगे।

पसोपेश में पड़े भोजदेव की माँ ने उन्हें पिता का दिया वचन याद दिलाया तो राजा की दुविधा पिघल गई। उन्होंने गोरी की माँग ठुकरा दी। अब युद्ध कहाँ टल सकता था। सारी सूचना आगे भिजवा कर म्लेच्छों से लड़ते रावल भोजराज ने किशोरावस्था में ही क्षात्रधर्म के पथ पर प्राणोत्सर्ग कर दिया[8] पर बलिदान कब व्यर्थ जाते हैं। उनके द्वारा समय पर सूचना अग्रेषित करने के परिणाम महत्त्वपूर्ण थे, जिन्हें हम आगे देखेंगे।

गोरी के हाथों लोद्रवा की ईंट से ईंट बजने के कारण अगले भाटी शासक रावल जैसल के काल में सामरिक रूप से श्रेष्ठ नई राजधानी जैसलमेर का कार्य आरम्भ हुआ। मुँहणोत नैणसी के अनुसार भोजदेव के काका जैसल सिंहासन न मिलने के कारण अपने पिता रावल दुसा जी को छोड़ गए और गोरी से संधि की, लोद्रवा पर आक्रमण में गोरी को सहायता देने पर वो जैसल जी को भाटी राज्य दिलवा देगा[9]। रावल जैसल के काल में आगे भाटी राज्य और गोरी के बीच कोई बड़ा संघर्ष या सहयोग तो नहीं दिखता। हाँ, शहाबुद्दीन से भाटियों का बदला अभी बाकी था (अगले अंक में)।

गोरी की ओर लौटते हैं। लोद्रवा से आगे उसकी मुस्लिम सेना पृथ्वीराज के राज्य की सीमा के आसपास पश्चिम से दक्षिण तक मंडराती रही। श्री रामवल्लभ सोमनी ने अपने पुस्तक में इस सेना के पथ का गहन विश्लेषण प्रस्तुत किया है। चौलुक्यों व अजमेर के चौहानों जैसे शक्तिशाली राज्यों से किसी बड़ी सीधी टक्कर से बचने के साथ-साथ गोरी थार मरुस्थल की गहराई से भी हटकर चलता रहा। गोरी का मार्ग उच्छ, लोद्रवा, किराड़ू, सांडेराव आदि से था। उसकी सेना इन स्थलों पर जो मिला- नगर, गाँव, मंदिर सब में लूटपाट और विध्वंस करती आगे बढ़ी। सेना के अग्रिम दस्ते कुछ दूरी पर अन्य स्थानों पर धावे करते भी देखे गए।

- चौहान राज्य की सीमा पर स्थित व्यापारिक नगर बीकमपुर मंडल, जिसका सामंत पृथ्वीराज के अधीनस्थ महामंडलेश्वर कतिया साँखला (परमार) था।
- फलोदी के पास खिचुण्ड गाँव
- ओसियाँ गाँव
- इस सब के अतिरिक्त बाद में अग्रिम दस्ते सांचौर तक भी गए।

(क्रमशः)

उद्धरण :

1. तबकात-इ-नासिरी खंण्ड 1, ले. मिन्हाज-उस्सिराज, अनु. मेजर रेवर्टी, पृ. 448-49, 2. शहाबुद्दीन ने बाद में 'मुइज़ुद्दीन' का उपनाम भी लिया, 3. प्राचीन नाम मूलस्थान है। 4. वर्तमान में 'उच्छ शरीफ' नाम से पाकिस्तान में, 5. Ghazni to Jaisalmer : Pre-medieval History of the Bhatis-Hari Singh Bhati, 6. नैणसी री ख्यात, खंड-2, पृ. 277, 7. धनागा ताल शिलालेख, राजस्थान का इतिहास, खंड-1, डॉ. गोपीनाथ शर्मा, पृ. 100, 8. भट्टिक वंश प्रशस्ति, श्लोक 107, संदर्भ : History of Jaisalmer - R. V. Somani, Pg 26, 9. नैणसी री ख्यात, खंड-2, अध्याय 20-22

राणा प्रताप के भाई महाराज शक्तिसिंह के दो पुत्रों का गौरक्षार्थ अमर बलिदान

– अरविन्दसिंह खोड़ियाखेड़ा

मेवाड़ के सिसोदिया राजवंश ने ऐसे तो मातृभूमि के लिए लगातार 1000 वर्षों तक असंख्य बलिदान दिए हैं, लेकिन महाराणा प्रताप के छोटे भाई महाराज शक्तिसिंह के दो पुत्रों ने गौरक्षा के लिए जो बलिदान दिया है वह मेवाड़ के इतिहास में अनूठा व दुर्लभ उदाहरण है, यह बलिदान शरणागत की रक्षा व सहायता करने का धर्म व गौ माता के प्रति अपार स्नेह को दर्शाता है।

सन् 1595-96 ईस्वी के आसपास की घटना है जिसका वर्णन सगत रासो में मिलता है। खेराड़ में पत्ता हाड़ा व उदा हाड़ा प्रतापी शासक थे, यह महाराणा प्रताप से विमुख रहते थे। कांठल (वर्तमान प्रतापगढ़) में कुछ चारण परिवार शक्तावतों का प्रश्रय पाकर बस गए थे। सिसोदिया वंश शुरू से चारणों का सम्मान करता आया है। चारण गौमाता के परमभक्त थे और बड़ी संख्या में गौमाता का पालन कर रहे थे। एक दिन सूर्योदय के समय खेराड़ के पत्ता हाड़ा का भाई उदा हाडा इन चारणों की गायों का हरण करके ले गया। चारणों ने शक्तावतों से मदद की गुहार लगाई। कोलाहल को सुनकर चतुर्भुज शक्तावत व मदन शक्तावत गायों को छुड़ाने के लिए दौड़ पड़े। महाराज शक्तिसिंह के पुत्रों का खून खोल उठा और वे अस्त्र- शस्त्र सहित शत्रुओं पर टूट पड़े।

चतुर्भुज शक्तावत व मदन शक्तावत को ऐसा शौर्य चढ़ा कि विरोधी हैरान रह गये। सामने पत्ता हाड़ा व उदा हाड़ा दोनों भाई भी बड़े पराक्रमी योद्धा थे। उन्होंने भी युद्ध में काफी पराक्रम दिखाया। हाड़ाओं व सिसोदियों के युद्ध में तीर ऐसे छूट रहे थे मानो वर्षा की अजस्र धाराएँ पड़ रही हों। भाले चमकने लगे और तलवारों के प्रहारों की झड़ी लग गई। शक्तावतों ने इस भीषण महासंग्राम में अंततः चारणों की गायें छुड़ा ली, लेकिन महाराज शक्तिसिंह के दोनों पराक्रमी पुत्र चतुर्भुज शक्तावत व मदन शक्तावत लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए। पहले चतुर्भुज बलिदान हुए बाद में मदन बलिदान हुए। दोनों भाई शत्रुओं को बुरी तरह मौत के घाट उतारते हुए स्वयं गौरक्षा हेतु बलिदान देकर अमर हो गए। जब भाई अचलदास शक्तावत को यह समाचार प्राप्त हुए कि चतुर्भुज व मदन दिवंगत हो गए हैं तो उन्हें बड़ा संताप हुआ।

सगत रासो में आगे वर्णन मिलता है कि बाद में इन हाड़ाओं से अचलदास शक्तावत, बल्लू शक्तावत आदि भाइयों ने बदला भी लिया था। महाराज शक्तिसिंह के दोनों पुत्र चतुर्भुज शक्तावत व मदन शक्तावत का यह बलिदान इतिहास में अनूठा व दुर्लभ उदाहरण है। ऐसे अमर बलिदानियों के नाम पर राज्य सरकार को पैनोरमा बनाने की घोषणा करनी चाहिए तथा पाठ्यक्रम में भी ऐसे गौरवशाली इतिहास को शामिल करना चाहिए।

बाद में इन्हीं चतुर्भुज शक्तावत के वंशजों को मेवाड़ रियासत की ओर से हिंता ठिकाने की जागीर प्रदान की गई। वर्तमान में हिंता, गोपालपुरा (कुण), खोडियाखेड़ा सहित दर्जन भर गाँवों में इन्हीं चतुर्भुज शक्तावत के वंशज बसे हुए हैं। चारणों ने शक्तावतों द्वारा दिए गए इस बलिदान के सम्मान में महाराज शक्तिसिंह व शक्तावतों के गौरवशाली इतिहास पर ''सगत रासो'' जैसे ऐतिहासिक ग्रन्थ की रचना की। गिरधर आशिया द्वारा रचित यह ग्रन्थ महाराज शक्तिसिंह के बारे में जनमानस में व्याप्त भ्राँतियाँ को भी दूर करता है। इसमें महाराज शक्तिसिंह के 8 से 10 पुत्रों द्वारा मेवाड़ के लिए दिए गए बलिदानों का भी विस्तारपूर्वक वर्णन है।

गतांक से आगे

महान क्रान्तिकारी राव गोपालसिंह खरवा

– भँवरसिंह मांडासी

देश में क्रान्तिकारी गतिविधियाँ –

हार्डिंग बम काण्ड :– 23 दिसम्बर, 1912 का दिन था। वायसराय लार्ड हार्डिंग गजारूढ़ होकर दिल्ली के चाँदनी-चौक बाजार से गुजर रहा था। दर्शकों में से किसी ने उनको निशाना बनाकर बम फेंका। वायसराय के गर्दन पर साधारण सी खरोंच आई परन्तु उनके पीछे होदे में बैठा अंगरक्षक मारा गया। ब्रिटिश खुफिया विभाग द्वारा अथक प्रयास करने पर भी बम फेंकने वाले व्यक्ति का पता न लग सका। वह कौन था? कहाँ का था? इस संदर्भ में क्रान्तिकारियों की भी भिन्न-भिन्न मान्यता रही है। परन्तु क्रान्ति संघर्ष के अधिकांश जानकार लोगों की मान्यता है कि बम फेंकने वाला बारहठ जोरावरसिंह था, जो बारहठ केशरीसिंह का लघु भ्राता था। इस घटना के बाद जोरावरसिंह आजीवन अज्ञात-वास में घूमता रहा। किन्तु पकड़ा नहीं जा सका। अंग्रेजों के खुफिया विभाग ने शक के आधार पर अनेक लोगों को पकड़ा था। भाई बालमुकुन्द को जोधपुर में और मास्टर अमीरचन्द को दिल्ली से इसी अभियोग में गिरफ्तार किया गया और उन्हें फांसी की सजा दी गई। बारहठ जोरावरसिंह पत्थर से सही स्थान पर निशाना लगाने में पारंगत था। बारहठ जोरावरसिंह के संदर्भ में बारहठ केशरीसिंह पर लिखे गये ग्रंथ में यथेष्ठ प्रमाणिक सामग्री का संकलन किया गया है। श्री सवाईसिंह धमोरा द्वारा सम्पादित ''बारहठ केशरीसिंह व्यक्तित्व और कृत्तित्व'' पुस्तक पठनीय है।

नीमेज हत्याकाण्ड :– विष्णुदत्त एक उग्र क्रान्तिकारी व्यक्ति था, जिसका बंग अनुशीलन समिति से सीधा सम्बन्ध था एवं राजपूताना में भी काफी समय तक रहते हुए उसने अर्जुनलाल सेठी, केशरीसिंह बारहठ और राव गोपालसिंह खरवा के प्रभाव क्षेत्रों में उपदेशक और प्रचारक के रूप में घूम फिरकर अपना प्रभाव जमा लिया था। दिल्ली बम काण्ड की हलचल भरी घटना से पूर्व ही विष्णुदत्त ने राजपूताना के क्रान्तिकारी युवकों के सहयोग से बिहार प्रान्त के आरा जिले के नीमेज गाँव में एक मठाधीश महन्त की तथा कोटा में जोधपुर के प्यारेराम नामक रामस्नेही साधु की हत्या करा दी थी, जिसका उद्देश्य क्रान्तिकारियों के लिये धन संग्रह करना था। उक्त कार्य में उसके साथी सेठी की जैन पाठशाला के तीन युवक मोतीचन्द, माणिकचन्द व जयचन्द थे। कोटा के युवकों में बारहठ जोरावरसिंह और उसके साथी थे। अजमेर के आर्य समाज छात्रावास के दो छात्र सोमदत्त लहरी और नारायणसिंह थे। हार्डिंग बम काण्ड हादसे की जाँच पड़ताल के समय से ही खुफिया विभाग की आँखें सेठी जी और बारहठ केशरीसिंह पर लगी हुई थी। सेठी का एक साथी शिवनारायण इन्दौर में घूमता हुआ पुलिस द्वारा सन्देह में पकड़ लिया गया। बम काण्ड के बारे में यद्यपि उसे कुछ भी जानकारी नहीं थी, परन्तु पुलिस द्वारा दी गई कठोर यातना सहने में कमजोर उस व्यक्ति ने नीमेज हत्याकाण्ड का भेद, जितना उसे मालूम था, खोल दिया। उसी आधार पर अर्जुन लाल सेठी तथा बारहठ दोनों बन्दी बना लिए गए। नारायणसिंह राठौड़ गोवलिया उस धर-पकड़ से पहले ही क्षय-रोग से पीड़ित होकर मृत्यु का ग्रास बन चुका था। इन्दौर के अंग्रेज पुलिस इन्सपेक्टर जनरल मि.

आर्मस्ट्रांग के निर्देशन में अभियोग चलाया गया। सेठी जी और केशरीसिंह जी को 20-20 वर्ष के कठोर कारावास की सजा दी गई। विष्णुदत्त और सोमदत्त को मुख्य अपराधी मानकर दस वर्ष की काले-पानी की सजा दी गई।

इन घटनाओं से राव गोपालसिंह का कोई सम्बन्ध नहीं था। सरकारी खुफिया विभाग ने भी गहन जाँच के पश्चात उन्हें उक्त काण्ड से जोड़ने की चेष्टा नहीं की। मि. आर्मस्ट्रांग की तहकीकात में सोमदत्त लहरी ने अपने बयान में बताया था कि ''वह अजमेर आर्यसमाज पाठशाला में खरवा के राव गोपालसिंह की आर्थिक सहयाता से पढ़ता था। विष्णुदत्त भी खरवा आता-जाता रहता था। बारहठ केशरीसिंह भी राव साहब के मित्र हैं। राव साहब अंग्रेजों के विरुद्ध बगावत करने को राजपूतों की सेना तैयार कर रहे हैं।''

राव गोपालसिंह को आरोप-पत्र :- सोमदत्त के बयानों से अंग्रेज सरकार को राव गोपालसिंह पर अराजकतावादी तत्त्वों से सम्पर्क रखने और उन्हें संरक्षण देने का संदेह उत्पन्न हुआ। राव साहब की अंग्रेज विरोधी कार्यप्रणाली से अजमेर के अंग्रेज अधिकारी पहले से नाराज थे। अजमेर के जिला कलेक्टर मि. ए.टी. होमर ने 23 अक्टूबर 1914 ई. को राव गोपालसिंह को डी.ओ. लेटर लिखकर पूछा। सोमदत्त लहरी के बयानों से ज्ञात हुआ है कि आप- 1. राजपूतों को सरकार के विरुद्ध बगावत करने को तैयार कर रहे हैं। 2. सोमदत्त भी आपके खर्चे से पढ़ा हुआ, ऐसे कार्यों में संलग्न है। 3. विष्णुदत्त एक अराजक नेता है। कोटा और नीमेज हत्याकाण्डों का मुख्य अभियुक्त है। वह आपके यहाँ आता है और उपदेशक के रूप में गाँवों में भेजा जाता है। 4. नारायणसिंह जिस पर अराजकता का अभियोग था और जो बन्दी बनाने से पूर्व ही मर गया, आपके खर्चे से शिक्षा पाया हुआ था। 5. गाड़सिंह भी आपके पास रहने वाला व्यक्ति था। 6. मि. आर्मस्ट्रांग की तहकीकात में आप स्वीकार कर चुके हैं कि बारहठ केशरीसिंह आपका मित्र था और वह खरवा आता रहता था।

उपर्युक्त आरोपों का युक्तियुक्त समुचित उत्तर देकर राव साहब ने समय से पूर्व आई विपत्ति को एक बार तो टाल दिया। यह भी सम्भव जान पड़ता है कि अंग्रेज अधिकारियों ने केवल एक अपराधी के बयानों के आधार पर ही प्रान्त के एक प्रभावशाली प्रमुख ताजीमी सरदार पर अन्य पुष्ट प्रमाणों के अभाव में कार्यवाही करना न्यायोचित न समझा हो। किन्तु तब से वे राव गोपालसिंह को अधिक संदेह की दृष्टि से देखने लगे।

यों भी उस समय में यह कोई विशेष ध्यानाकर्षक घटना नहीं थी। पंजाब, उत्तरप्रदेश तथा बिहार में ऐसी राजनैतिक हत्याएँ एवं घटनाएँ प्रतिदिन घट रही थी। देश में भीतर-ही-भीतर अंग्रेज विरोध की अग्नि सुलग रही थी। रास बिहारी बोस और शचिन्द्रनाथ के नेतृत्व में समस्त क्रान्तिकारी दल एक निश्चित समय पर एक साथ ब्रिटिश शक्ति पर जोरदार प्रहार करने की योजना बना चुके थे।

क्रान्तिकारियों की उपर्युक्त योजना एवं कार्यविधि के संदर्भ में हमें केवल यह देखना है कि उस काल में क्रान्तिकारियों के साथ राव गोपालसिंह खरवा के क्या सम्बन्ध थे और उनका उस क्रान्ति कार्य में क्या योगदान था। श्री हरिप्रसाद अग्रवाल ने ''आजादी के दीवाने'' पुस्तक में राव गोपालसिंह के संदर्भ में लिखा है कि वे सन् 1915 ई. की भारतव्यापी क्रान्ति के प्रमुख आयोजकों में से एक थे।

20 जून, 1915 से पूर्व के दस महीनों की राव गोपालसिंह की गतिविधियों का संक्षिप्त वर्णन इस प्रकार है -

दिल्ली निवासी पं. बालकृष्ण ऊखल क्रान्तिकारियों से सम्बन्धित व्यक्ति था। चांदनी चौक बाजार में उसकी दुकान थी। दिल्ली जाने पर राव गोपालसिंह उसके यहाँ ठहरते और उसके माध्यम से दिल्ली और पंजाब के कतिपय क्रान्तिकारियों से उनकी भेंट होती थी। गुजरात के कपटगंज शहर का निवासी मणिलाल नामक युवक पं. बालकृष्ण का विश्वासी व्यक्ति था और क्रान्तिकारियों के मध्य काम करता था। दिल्ली के प्रमुख क्रान्तिकारियों की तरफ से वह राव गोपालसिंह से मिलता और उन्हें वहाँ की गतिविधियों से परिचित कराता था। पं. बालकृष्ण के कहने पर खरवा के शस्त्रागार से उसे एक पिस्टल व कुछ कारतूस दिए गए थे। शचिन्द्रनाथ सान्याल तथा राव गोपालसिंह के सम्पर्क की बिचली कड़ी का काम बन्दी बनाए जाने से पूर्व बारहठ केशरीसिंह का पुत्र प्रतापसिंह करता था। उसके माध्यम से शचिन बाबू के पास कुछ रिवाल्वर तथा कारतूस भेजे गए थे। बड़ौदा के महाराजा सियाजी राव गायकवाड़ से उसी समय में राव गोपालसिंह बड़ौदा जाकर मिलकर आए थे।

पं. सांवलराम शर्मा जो अपने नाम के आगे राष्ट्रसेवक शब्द लगाता था, सीकर ठिकाने के लक्ष्मणगढ़ शहर का निवासी था। कलकत्ता, गिरड़ी, कोडरमा आदि स्थानों पर रहकर उसने खनिज धातुओं के विषय का ज्ञान प्राप्त कर लिया था। कलकत्ता से वह राव गोपालसिंह के साथ खरवा चला गया। शरीर से दुबला-पतला, साधारण कद-काठी वाला पं. सांवलराम देश-भक्ति के जोश में मतवाला बना रहता था। राव गोपालसिंह ने उसे खरवा में पाए जाने वाले खनिज पदार्थों के अन्वेषण कार्य में लगा रखा था। परगने के गाँवों के मेहनतकश लोग पंडितजी की देख-रेख में खानों में मजदूरी करते थे। पंडित जी उनसे और वे पण्डितजी से पूरे परिचित हो चुके थे। देश में विप्लव आरम्भ होने पर रेलों की पटरियाँ उखाड़ना एवं संचार व्यवस्था भंग करना व तार काटना भी क्रान्तिकारियों की योजना का एक अंग था। खरवा राज्य के रावत, मेहरात, गूजर आदि लोग उस कार्य के अभ्यस्त थे। पं. सांवलराम की देखरेख में उन लोगों की एक टुकड़ी उसी योजना की पूर्ति हेतु बनाई गई थी और उन्हें तार काटने एवं रेल पटरियाँ उखाड़ने के औजार मंगाकर दिये गये। उस काम की विशेष ट्रेनिंग देने हेतु उत्तरप्रदेश से तीन व्यक्ति-वासुदेवसिंह, सूरजसिंह और रामप्रसाद खरवा आए। वे उचित समय पर पुन: खरवा आने की कहकर गए थे किन्तु नहीं आए। सम्भव है कि पुलिस द्वारा पकड़ लिए गए हों।

जनवरी 1915 के आरम्भ में ही राव गोपालसिंह खरवा से बाहर जंगलों में तम्बुओं में जीवन बिताने चले गए थे। ऐसा वे पहले भी समय-समय पर करते रहते थे। खरवा से चार मील दूर दक्षिण में खरवा-मसूदा के बीच पहाड़ियों से घिरे ''कालाबली'' नामक शिकारगाह के जंगल में उनके डेरे-तम्बू लगे हुए थे। महीने भर वहाँ रहने के बाद फरवरी में वे खरवा के समीपस्थ कान्हेड़ा पहाड़ी की दक्षिणी तलहटी में गोपालसागर के खुले मैदान में चले आए। उक्त स्थान अजमेर से ब्यावर जाने वाले जनपथ से दक्षिण दिशा में समीप ही है। मगरा व मारवाड़ से आने वाले लोगों से सम्पर्क बनाए रखने हेतु वह स्थान उपयुक्त था। कान्हेड़ा, तोलिया और माघेड़ा नाम की तीन छोटी पहाड़ी शृंखलाएँ जनपथ (पक्की सड़क) के आवागमन की हलचल से उक्त मैदान को छिपाए सजग प्रहरी की भाँति खड़ी है। शस्त्रास्त्रों से सजे राव गोपालसिंह अपने भरोसे के मारका साथियों के साथ उक्त मैदान में लगे। कैम्पों में रह रहे थे। उनके साथ के सेवाकर्मी सेवकों के अलावा जरूरत पर संघर्ष में जूझने वाले और उनके लिये प्राणोत्सर्ग करने वाले अनेक योद्धा

वहाँ उपस्थित थे। उनके कुटुम्ब में काका ठा. मोड़सिंह भवानीपुरा, खरवा के राजपुरोहित मोड़सिंह, राव साहब के निजी सचिव भूपसिंह, सवाईसिंह ततारपुरा, चन्द्रसिंह देवगढ़ (खरवा), बख्तावरसिंह मालावास आदि जीवट वाले लोग हरदम वहाँ बने रहते थे। मारवाड़ के सीमावर्ती गाँवों रावणिया, सुमेल, रास, बाबरा, गिरी, नानणा आदि ग्रामीण क्षेत्रों में भूरदान बारहठ खारी बारेठान, रूपदान बारहठ और उनके सहयोगी घूम रहे थे, ताकि विप्लव में भाग लेने के इच्छुक लोगों को ठीक समय पर सूचना दे सकें।

ग्रामीण जनता में तब अनेक प्रकार की अफवाहों का बाजार गर्म था। कहा जा रहा था कि युद्ध में विजयी होकर जर्मन फौजें स्वेज नहर तक पहुँची हैं। अब जल्दी ही अंग्रेजों को निकालने हेतु भारत पर हमला कर देंगी। भारतीय सैनिक भी विद्रोह करके छावनी बैरिकों से बाहर निकल आयेंगे। देश के गाँवों के नौजवान भी उनमें शामिल होकर अंग्रेजों पर हमला कर देंगे। भयंकर मार-काट मचेगी। भारी रक्तपात होगा। देश से अंग्रेजों को निकालने का यही मौका है। जर्मन विजय की लोग हृदय से कामना कर रहे थे। पशुपालकों के ग्वाल-बाल जंगलों में बकरियाँ चराते हुए उमंग से गाते थे-''घर-घर बकरी घर-घर ऊँट, जर्मन फिरगो चारों कूँट।''

(क्रमशः)

रजपूत और रजपूती

- दिग्विजयसिंह गोगरिया

मात्र बात रखने को कर देती सर्वस्व अर्पित।
सदा अटल अडिग सिद्धान्तों के प्रति समर्पित।।

अमर्यादित परिहास पर देखा नयनों से अंगार झरते।
नन्हें नन्हों को देखा मात्र बात की खातिर लड़ते।।

हट की पूर्ति खातिर, राड़ बढ़ाने वालों को।
देखा शिव के सम्मुख नाड़ चढ़ाने वालों को।।

जय प्रतीक केसरिया ध्वज, में बसी है रजपूती।
कटिबद्ध है त्याग पर, कमर कसी है रजपूती।।

आंटिली मूंछों पर तनी, तरंग रहती रजपूती।
बिना डरे निडर मस्त, मलंग रहती रजपूती।।

केसरिया से रजपूतों में, रंग चढ़ती रजपूती।
युद्धों के मैदान भरसक, जंग चढ़ती रजपूती।।

सर्वप्रथम निज स्वाभिमान, सजाती रजपूती।
अरि की तलवार से तलवार, बजाती रजपूती।।

बड़ी सोच बड़ा हृदय हथियार है रजपूत के।
रजपूती विचार और संस्कार है रजपूत के।।

दिग्विजय मनत्व रहा, सबसे पहले देश यहाँ।
रजपूत है मानव मात्र, रजपूती विशेष यहाँ।।

वक्त वक्त पर रक्त से, समर भूमि भरी रही।
मरते रहे रजपूत, रजपूती खरी की खरी रही।।

रज का पुत्र रजपूत, आज भी वह बात है क्या?
रजपूत की शैली में रजपूती का साथ है क्या?

●

ब्रह्म ज्ञान से जो चीज मुझे अच्छी लगती है, वह यह है कि आदमी अपने संकुचित शरीर और मन से हटकर सब लोगों से अपनापन महसूस करे।

- राममनोहर लोहिया

काइदरा 'कासिंद्रा' का युद्धः सोलंकी रानी नायिकी देवी

– नारायणसिंह झाड़ोली

भारत माता की कोख से एक से बढ़कर एक वीर ही नहीं बल्कि कई वीरांगनाओं ने भी जन्म लिया है जिन्होंने भारत माता की रक्षा के लिये अपने सर्वस्व सुखों का त्याग कर अपनी मातृभूमि की पूरे मनोयोग के साथ रक्षा की। ऐसी महान वीरांगनाओं की श्रेणी में सोलंकी रानी नायिकी देवी का भी नाम आता है, इतिहास के पन्नों से गायब यह एक ऐसी वीरांगना थी जिसने पृथ्वीराज चौहान को धोखे से पराजित करने वाले मोहम्मद गौरी को नपुंसक बना दिया और युद्ध में गौरी को रणभूमि छोड़ भागने को मजबूर कर दिया था। परन्तु इस वीरांगना को हमारे देश के कुंठित मानसिकता के इतिहासकारों ने इतिहास की किताबों से गायब ही कर दिया।

परिचय :

रानी नायिकी देवी गोवा के महाराजा शिवचिता परमर्दि की पुत्री थी जो कदंब के महामंडलेश्वर थे। रानी में बाल्यकाल से ही विलक्षण प्रतिभा और असाधारण व्यक्तित्व की छाप दिखाई देती थी। रानी नायिकी देवी युद्धकला में निपुण होने के साथ-साथ एक कुशल कूटनीतिज्ञ भी थी।

रानी नायिकी देवी का विवाह गुजरात के शासक चालुक्य (सोलंकी) वंशीय महाराजा अजयपाल सिंह सोलंकी से हुआ था, जो कुमारपाल सिंह सोलंकी के सुपुत्र तथा सम्राट सिद्धराज जयसिंह सोलंकी के प्रपौत्र थे। महारानी नायिकी देवी एवं महाराजा अजयपाल सिंह के दो पुत्र थे, ज्येष्ठ पुत्र का नाम मूलराज द्वितीय एवं छोटे पुत्र का नाम भीमदेव द्वितीय था। मूलराज द्वितीय को बाल मूलराज के नाम से भी जाना जाता है, क्योंकि उनका राज्याभिषेक बाल्यकाल में ही हुआ था। गुजरात प्रदेश पर चालुक्य वंश का शासन था तब के समय में अन्हिलवाड़ा (पाटण) प्राचीन गुजरात की महिमामयी राजधानी थी, इस जगह को राजधानी बनाने का कारण यह था कि अन्हिलवाड़ा (पाटण) संपूर्ण गुजरात के क्षेत्र को स्पर्श किये हुए था।

रानी नायिकी देवी द्वारा राजमाता की भूमिका में गुजरात की बागडोर संभालना :

सन् 1175 ईस्वी में महाराजा अयजपाल सिंह सोलंकी की उनके ही अंगरक्षक ने हत्या कर दी। महाराजा अजयपाल सिंह का शासनकाल केवल चार वर्ष 1171 से 1175 ईसवी तक का था। महाराजा की असमय मृत्यु गुजरात राज्य के लिये संकट का समय था क्योंकि कई विदेशी आक्रांताओं की और दुश्मनों की नजर इस राज्य पर थी। महाराजा अयजपाल सिंह सोलंकी की मृत्यु के पश्चात कई दुश्मन इस राज्य की आमदनी और धन दौलत पर कब्जा जमाना चाहते थे। गुजरात राज्य के सामने पहला संकट तो यह था कि राज्य की कमान किसके हाथों में सौंपी जाए।

राज्य के वरिष्ठ मंत्रियों, सामंतों और दरबारी राजाओं ने मिलकर यह निर्णय लिया कि राजनीतिक कुशलता और कूटनीतिज्ञ रानी नायकी देवी के हाथों में यह राज्य सुरक्षित रहेगा और उन्हें राज्य की कमान सौंपने का निर्णय लिया गया। लेकिन रानी नायिकी देवी ने यह कहकर राज्य की कमान संभालने से मना कर दिया कि नियमानुसार इस राज्य के वारिस के जिंदा रहते दूसरा कोई सिंहासन पर नहीं बैठ सकता है।

लेकिन जब सामंत और मंत्री अपनी बात पर अड़ गए तो अंततः महारानी नायिकी देवी ने निर्णय लिया कि वो राज्य की प्रतिनिधि बनकर महाराजा बाल मूलराज द्वितीय का मार्गदर्शन करेगी एवं राज्य की

अगुवायी भी करेगी, इस तरह महारानी नायिकी देवी राजमाता की भूमिका का पालन करने लगीं।

महाराजा मूलराज द्वितीय को सिंहासनारोहण किये हुए कुछ वर्ष बीते ही थे कि अचानक राज्य में घोर विपत्ति का अंधेरा छा गया। राजमाता नायिकी देवी के गुप्तचरों ने गुप्त सूचना पत्र भेजकर बताया कि किस तरह गिद्ध नरमांस भोजन के लिये तैयार बैठा है और कभी भी गिद्धों का झुंड राज्य में प्रवेश कर सकता है। यहाँ गिद्ध का अर्थ तुर्की आक्रमणकारी और नरमांस भोजन अर्थात् राज्य की प्रजा को मौत के घाट उतारकर उनका सर्वस्व लूटकर ले जाने से है।

काइदरा 'कासिंद्रा' का युद्ध :

भारत ने ऐसे कई आक्रमण झेले हैं परन्तु भारतीय वीरों की तलवारों ने उन सभी आक्रमणकारियों का पांव उखाड़ फेंका है। प्रथम खलीफा के शासन के बाद अरबी लूटेरों ने भारत पर अनेक आक्रमण किये पर कामयाब नहीं हो पाये। भारत के अलावा संपूर्ण विश्व पर मलेच्छ आक्रमणकारी अरबी लूटेरों का कब्जा हो चुका था एवं 620 ईसवी से नवीन मजहब के जन्म के साथ मूर्तिपूजकों पर बहुत क्रूर अत्याचार हो रहा था। आर्यवर्त के अलावा जितने भी मूर्तिपूजक राष्ट्र थे, उन सबका अस्तित्व मिटा दिया गया। तुर्की लुटेरे मुहम्मद गौरी ने सन् 1178 ईस्वी में अपने समुद्र जितनी विशाल सैन्यबल के साथ लाहौर पर धावा बोला। भारत में वो अपनी सल्तनत कायम करने के उद्देश्य से आगे बढा, मुलतान के मार्ग से होते हुए गोमाल दर्रा का मार्ग प्रशस्त किया। मुलतान एवं उच्छ से होते हुए तेज गति से उत्तर पूर्व की ओर कूच किया जहाँ राजपूत शासकों का शासन था। इस मार्ग से होते हुए उसने अन्हिलवाड़ा (पाटण) की ओर कूच किया।

सन् 1178 ईसवी में गदाराराघट्टा (माउंट आबू की तलहटी पर स्थित एक उबड़-खाबड़ इलाका) पर मुहम्मद गौरी ने अपना सैन्य शिविर बनाया। जो वर्तमान राजस्थान के सिरोही जिले में काशिन्द्रा गाँव के समीप स्थित एक जगह है, यहीं पर मोहम्मद गौरी और सोलंकी रानी नायिकी देवी के बीच युद्ध हुआ, जिसे काइदरा 'कासिंद्रा' का युद्ध (Battle of Kaindra) भी कहते हैं।

मोहम्मद गौरी ने सोलंकी रानी नायिकी देवी के साम्राज्य पर सीधा आक्रमण न करके अपने एक दूत के जरिए संदेश भिजवाया कि रानी और उसके बच्चों के साथ-साथ राज्य की सभी महिलाओं एवं कन्याओं को धन दौलत समेत मुझे सौंप दो, नहीं तो सभी को मौत के घाट उतार दिया जाएगा।

राजमाता के सेनापति के हाथों गौरी का दूत पत्र सौंपकर, उत्तर की प्रतीक्षा में महल के प्रवेश द्वार पर प्रतीक्षा करने लगा। राजमाता नायिकी देवी ने अपने सेनापति कुँवर रामवीर के हाथों पत्र का उत्तर लिख कर भेजा कि 'जाओ जाकर गौरी से कह दो कि हमने उनकी शर्तें मान ली हैं।'

राजमाता ने अत्यन्त कुशलतापूर्वक एवं बुद्धिमत्ता के साथ निर्णय लिया। गौरी जैसे क्रूर आक्रमणकारी के साथ कूटनीति से युद्ध करना ही उचित होगा। राजमाता ने भारत की अस्मिता अर्थात् आर्यवर्त की माताओं एवं नाबालिग कन्याओं पर कोई आँच ना आये, इसलिये गौरी की शर्तों को मानकर उसे भ्रम में रहने दिया। गौरी के पास जब यह खबर पहुँची कि उसकी शर्तें मान ली गई हैं, तो उसने इस खबर को सच मान लिया कि राजमाता ने बिना युद्ध किये हथियार डाल दिये और उसने इस आसान जीत की जश्न मनाने की तैयारियाँ शुरू कर दी।

राजमाता नायिकी देवी इसी प्रतीक्षा में थीं, उन्होंने अपने सेनापति को आदेश दिया कि राज्य के गुप्त द्वार से माताओं एवं कन्याओं को लेकर राज्य के प्रजागण पड़ोसी राज्य नाडोल में जाकर शरण लें। नाडोल के चौहान वंशीय महाराजा कल्हणदेव चौहान ने गुजरात

से आये शरणार्थियों को शरण दी। प्रजा को सुरक्षित स्थल पर पहुँचाने के बाद राजमाता नायिकी देवी ने अपने दोनों पुत्रों को पीठ पर बाँध लिया और घोड़े पर सवार होकर गौरी के शिविर की ओर चल दी। मेरुतंग द्वारा लिखी गयी ''प्रबन्ध चिंतामणि'' एवं अन्य इतिहासकारों ने भी इस बात की पुष्टि की है। राजमाता नायिकी देवी की योजना अनुसार यह रणनीति बनाई गई थी कि राजमाता के निकलने से पूर्व ही गौरी के सैन्य शिविर में 200 राजपूत योद्धा भेष बदलकर उपस्थित रहेंगे। वे गौरी के सैनिकों में छिपकर रहेंगे और कुछ हजार राजपूत योद्धा आबू पर्वतों की घाटियों का सहारा लेकर अन्हिलवाड़ा (पाटण) की सीमा को घेरकर रखेंगे। राजमाता नायिकी देवी की इस अप्रतिम रणनीति ने उन्हें भारत की सबसे कुशल योद्धा बनाया।

राजमाता गौरी को भ्रम में रखना चाहती थी, इसलिए उन्होंने अपने 25,000 सैनिकों को कई टुकड़ियों में बाँट दिया। कुछ गौरी के सैन्यबल में मिल गए, कुछ आबू पर्वत की घाटियों को घेर कर छिप गए और कुछ ने कायादरा की सीमा को घेर लिया। राजमाता घोड़े पर सवार होकर गौरी के सैन्य शिविर की ओर चल पड़ी। उनसे पचास योजन की दूरी पर उनके पीछे उनके बाकी बचे सैन्यबल को लेकर सेनापति कुँवर रामवीर थे।

गौरी अपने शिविर से बाहर निकल कर चालुक्य 'सोलंकी' राजपूतों के सैन्य शिविर की ओर देखने लगा। उसने देखा कि कुछ घुड़सवार उसके सैन्य शिविर की ओर आ रहे हैं और नजदीक आने पर उसने देखा कि राजमाता अपने बच्चे को अपने साथ बांधकर उसकी ओर आ रही है। गौरी इस भूल में था कि राजमाता की पराजय हो चुकी है। वह मन ही मन हँस ही रहा था कि अचानक से रानी नायिकी देवी के घोड़े रुक गए। इससे पहले कि वह कुछ समझ पाता, उसके शिविर में मौजूद राजमाता के गुप्त सैनिकों ने हर हर महादेव का शंखनाद करते हुए आक्रमण कर हाहाकार मचा दिया। इस बीच राजमाता नायिकी देवी के पीछे गजसेना, अश्वसेना एवं पैदल सैनिकों के सैलाब ने पर्वत और पथ को घेर लिया था। गौरी के पास कुछ सोचने एवं समझने का समय नहीं रहा। उसने आनन-फानन में अपनी भागती सेना को एकत्र किया और आक्रमण की तैयारी की।

राजमाता नायिकी देवी के दोनों हाथों में तलवार थी, साक्षात दुर्गा बन अवतरित हुई राजमाता नायिकी देवी एक के बाद एक आक्रमणकारियों को गाजर-मूली की तरह काट रही थी मानो आज आर्यवर्त की पावनधरा का आक्रमणकारियों के रक्त से अभिषेक हो रहा हो। अन्त में राजामता गौरी के सैनिकों के चक्रव्यूह को भेद कर गौरी तक पहुँच गयी। गौरी उनकी एक झलक पाकर भयभीत होकर भागने लगा। अंत में राजमाता ने उसे घेर लिया। इस बार गौरी भाग नहीं पाया। राजमाता की तलवार की वार से गौरी मूर्छित हो गया, उसका अंग भंग हो गया था। इससे पहले की गौरी राजमाता के हाथों से मृत्यु को प्राप्त होता, गौरी की सेना वहाँ आ पहुँची और उन्होंने गौरी को वहाँ से घायल अवस्था में बचाकर निकाल लिया।

गौरी इतना डर गया था कि उसके घाव से खून बहने के बाद भी वह घोड़े से नहीं उतरा था और सीधा मुल्तान पहुँच कर घोड़े से उतरा। गौरी ने अपने सैनिकों को हुकुम दिया था कि घोड़ा किसी हाल में नहीं रुकना चाहिए चाहे उसे नींद आ जाये या कितनी भी इलाज की जरूरत पड़ जाए पर घोड़ा मुल्तान गंतव्य पहुँच के ही रुकना चाहिए। अगर घोड़ा कहीं रुक जाए थक कर तो उसे दूसरे घोड़े पे बैठा कर ले जाने का हुकुम दे रखा था। जब गौरी मुल्तान पहुँचा तो वह पूरी तरह से खून से लथपथ था। उसे पता चला कि रानी नायिकी देवी के तलवार के वार से वह अपना गुप्तांग खो चुका था और हमेशा के लिये नपुंसक बन गया था।

इसके बाद 13 वर्षों तक गौरी की भारत पर आक्रमण करने की हिम्मत नहीं हुई। कर्नल टॉड एवं डॉ. दशरथ शर्मा की पुस्तकों से यह साक्ष्य मिलता है कि दिल्ली नरेश सम्राट केल्हानदेव चौहान, नाहरवाल के महाराजा राये जो कि मात्र 14 वर्ष के थे, जालोर के महाराजा कीर्तिपाल चौहान एवं अर्बुदा के शासक धारावर्ष परमार के साथ सोलंकी रानी नायिकी देवी की सहायता के लिये अपने अपने सैन्यबल के साथ रणभूमि में उपस्थित हुए थे।

सोलंकी रानी नायिकी देवी के रूप में काल का साक्षात दर्शन प्राप्त करने के बाद मानसिक रूप से एवं तलवार के वार से शारीरिक रूप से नपुंसक बनने के बाद गौरी जब तक जीवित रहा, वह उस राजपूतानी के युद्ध कौशल एवं तलवार के वार को कभी नहीं भुला पाया। लड़ाई के लिये अब वह असमर्थ हो चुका था। उसे अब अपने दासों पर निर्भर होना पड़ा। उसका वंश भी आगे नहीं बढ सका, उसने अपनी सारी सम्पत्ति एवं राज्य को उसके द्वारा बनाये गये गुलामों में बाँट दिया।

विभिन्न लेखों एवं शिलालेखों में रानी नायिकी देवी की विजय का उल्लेख :

रानी नायिकी देवी की विजय का उल्लेख गुजरात के राज्य इतिहासकारों के साथ-साथ चालुक्य शिलालेखों में भी मिलता है। गुजराती कवि सोमेश्वर की रचनाओं में उल्लेख है कि कैसे मूलराज की सेना ने गौरी को हराया। एक अन्य कवि उदयप्रभा सूरी ने भी रानी की जीत का जिक्र किया है इसके अलावा, भीम द्वितीय (मूलराज द्वितीय के भाई और उत्तराधिकारी) के शासनकाल में लिखे एक चालुक्य शिलालेख में भी रानी की बहादुरी का जिक्र है साथ ही, मोहम्मद गौरी की हार का जिक्र 13वीं शताब्दी के फारसी लेखक मिन्हाज-उस-सिराज के लेखों में भी इस युद्ध का उल्लेख मिलता है।

हालांकि, काइदरा की लड़ाई का सबसे विस्तृत विवरण 14वीं शताब्दी के जैन इतिहासकार मेरुतंग ने किया है। उसमें बताया गया है कि कैसे रानी नायिकी देवी ने मोहम्मद गौरी की सेना को शिकस्त दी।

भारत के इतिहास की सबसे महान योद्धाओं में महिलाओं में से एक राजमाता नायिका देवी की अदम्य साहस और अदम्य भावना झाँसी की रानी लक्ष्मी बाई, मराठों की रानी ताराबाई और कित्तूर की रानी चेन्नम्मा के बराबर है। फिर भी, इतिहास की किताबों में उसकी अविश्वसनीय कहानी के बारे में बहुत कम लिखा गया है।

राजमाता नायिकी देवी जैसी वीरता की मूर्ति यह साबित करती है कि भारत में स्थायी रूप से इस्लामिक शासन कोई नहीं स्थापित कर पाया था। ऐतिहासिक नक्शे कासिम से लेकर औरंगजेब तक के शासनकाल तक का सब धोखा है, अप्रमाणित है (वामपंथी इतिहासकारों ने 1957 से इतिहास लिखना शुरू किया था इन मार्क्स के लाल बंदरों ने जहाँ जहाँ मुस्लिम बहुल इलाके का नक्शा मिला, 1939 से लेकर 1950 तक का, उसी को औरंगजेब एवं मुगल, अफगान, तुर्क इत्यादि लुटरों की राजधानी बना दिया और उनके द्वारा शासित किये गए राज्य बना दिये)।

वामपंथ इतिहासकार ने इतिहास में मुगलों को भारत विजय का ताज पहना दिया। हकीकत में हिन्दू राजाओं एवं दुर्गा स्वरूप रानी से पराजय होकर जिहादी लूटेरों को वापस अरब के रेगिस्तान में लौटना पड़ा। इतिहास में दंत कथाओं के इतिहास को ज्यादा बढ़ावा मिला है लेकिन सत्य इतिहास को बहुत कम।

रानी नायिकी देवी का इतिहास भारतीय इतिहास के पन्नों में स्वर्णिम अक्षरों में लिखा जाना चाहिए था लेकिन दोहरी मानसिकता से ग्रसित इतिहासकारों ने भारत की इस वीर वीरांगना का उल्लेख कभी नहीं किया जबकि महिला सशक्तिकरण अभियान के प्रतीक के रूप में सोलंकी रानी नायिकी देवी जैसी वीरांगनाओं का नाम प्रथम अध्याय में होना चाहिए था।

मर्यादा के दृष्टिकोण से भगवान श्रीराम और श्रीकृष्ण

– व्याख्याकार–परमहंस स्वामी श्री अड़गड़ानन्द जी

संकलन–डॉ. भंवरसिंह भगवानपुरा

'राम देखि सुनि चरित तुम्हारे। जड़ मोहहिं बुध होहिं सुखारे।।' यतिचक्र चूड़ामणि गोस्वामी तुलसीदास जी द्वारा लिखित या विरचित श्री रामचरितमानस के अनुसार आदि कवि बाल्मिकी का उद्घोष है–राम! आपका चरित देख–सुनकर प्रबुद्धजन हर्षित होते हैं किन्तु उसी चरित्र को देख–सुनकर जड़ व्यक्ति मोह को प्राप्त होते हैं। इतना ही नहीं, भगवान का रहस्यमय चरित्र मुनि जनों को भी भ्रम में डाल देता है–

निर्गुन रूप सुलभ अति सगुन जान नहिं कोइ।
सुगम अगम नाना चरित, सुनि मुनि मन भ्रम होई।।

– मानस 7/73ख

अस्तु सामान्य जन भगवत चरित्र पर टीका–टिप्पणी करें तो आश्चर्य ही क्या? मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम तथा लाला पुरुषोत्तम भगवान श्रीकृष्ण भारतीय अध्यात्म तथा संस्कृति के युग पुरुष हैं, जिनका ज्योतिर्मय व्यक्तित्व एवं कृतित्व अनन्त काल पर्यन्त जन–जीवन को आलोकित करता रहेगा। किन्तु आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक परिस्थितियों से उत्पीड़ित जन दुर्व्यवस्था को इन–इन महापुरुषों के नाम से प्रवर्तित किया जाता देख अज्ञान एवं आक्रोश वश इन चरित्र नायकों के व्यक्तित्व का ही छिद्रान्वेषण करने लग जाते हैं।

भगवान का लोकरंजक स्वरूप उन्हें आकर्षित नहीं कर पाता। उनका आक्षेप है कि वृक्ष–पार्श्व में छिपकर बाली का वध करने वाले, अनुज लक्ष्मण से शूर्पणखा को विरोपित कराने वाले, अग्नि–परीक्षिता सीता का परित्याग करने वाले तथा तपस्यारत शूद्र शम्बूक के हत्यारे राम को वे अपना आराध्य नहीं मान सकते। इसी प्रकार पूतना नामक नारी के हत्यारे, बृजांगनाओं का चीर हरण कर उन्हें नग्नता के लिए विवश करने वाले, रुक्मिणी इत्यादि पत्नियों के होते हुए भी राधा का साथ करने वाले कृष्ण उनके आदर्श नहीं हो सकते।

भगवान श्रीराम का चरित्र लाखों वर्षों से जन मानस को अनुप्राणित करता रहा है। आदि कवि से लेकर अद्यावधि रामकथा पर लेखन चलता रहा है। **'नाना भांति राम अवतारा। रामायन सतकोटि अपारा।'** सौ करोड़ और उससे भी अधिक अपार रामायण हैं। टेलीविजन पर रामायण सीरियल प्रसारित करने वालों ने कम्ब रामायण इत्यादि सात–आठ रामायणों से उद्धरण लिया। रामायण मूलतः भगवान शिव के हृदय की उपज है–

रचि महेस निज मानस राखा।
पाइ सुसमउ सिवा सन भाखा।।

–मानस 1/34/6

सीता हरण के पश्चात् भगवान राम का दर्शन कर शंकर जी ने मस्तक टेक कर उन्हें प्रणाम किया। कुसमय जानकर उनके समीप नहीं गये। उनके इस व्यवहार से उनकी अर्द्धांगिनी सती चिन्ता में पड़ गई कि यत्र–तत्र अपनी नारी की खोज में भटकने वाला भगवान कैसे हो सकता है? जबकि उन्हीं राम की कथा वे महर्षि अगस्त्य से सुनकर आ रहे हैं। भगवान शिव ने ही महर्षि को शिवकथा सुनाई थी। सती को संदेह हुआ जिसके निवारण का उपक्रम रामकथा के माध्यम से भगवान शिव को कहना पड़ा।

बालिवध– कुछ ऐसी ही शंका उन लोगों को है जो कहते हैं कि वृक्ष की ओट में छिपकर बालि का

वध करने वाले राम भगवान नहीं हो सकते। **'रामचन्द्र के भजन बिनु पसु बिनु पूंछ बिषान।'**

विषय बस्य सुर नर मुनि स्वामी।
मैं पावँर पशु अति कामी।। 4/20/2
विषय मोर हरि लीन्हेउ ग्याना। 4/18/2

क्योंकि यह सर्वमान्य सिद्धान्त है कि ईश्वर की भक्ति से हीन व्यक्ति मानव होते हुए भी पशुतुल्य है। राम-एक परमात्मा के भजन के बिना जो कल्याण चाहता है वह बिना सींग-पूंछ का पशु है। उसमें और पशु में कोई अन्तर नहीं है। सुग्रीव ने कहा-मैं पामर हूँ, पशु हूँ, कामी हूँ। विषयों ने मेरा ज्ञान हर लिया। इसी प्रकार बालि भी था। रावण को बगल में दबाकर घूमने वाला बालि अन्त में इतना मदान्ध हो गया कि कोई हमारा क्या कर लेगा? वह सामाजिक मर्यादाओं का उल्लंघन करने लगा। तब भगवान ने उसे बाण मारा। जिस पाप के लिए ब्याघ्र की तरह बालि को मार डाला, वही पाप सुग्रीव ने किया और वही करनी विभीषण की थी, किन्तु **'सपनेहूं सो न राम हिंय हेरी।'** स्वप्न में भी हृदय में उस पर ध्यान नहीं दिया क्योंकि उन सभी ने प्रभु से क्षमा माँग ली। **'सनमुख होइ जीव मोहि जब ही। जन्म कोटि अध नासहिं तब ही।'** जीव ज्योति मेरी ओर उन्मुख होता है, उसके करोड़ों जन्मों के पाप नष्ट हो जाते हैं। सृष्टि का ऐसा कोई पाप नहीं है जो प्रभु की ओर, राम की ओर उन्मुख होने पर समाप्त न हो जाए।

सुग्रीव जैसे पलायनवादी, भीरु मनोवृत्ति के व्यक्ति को भगवान ने वीरता का विधिवत प्रशिक्षण दिया। बालि से एक बार घायल होने पर पुन: लड़ा। उसके हृदय में प्रसुप्त पराक्रम जागृत हो गया और जब वह लंका पहुँचा तो त्रैलोक्य विजयी रावण को भी उसने ललकार दिया। सुग्रीव से युद्ध में पार पाता न देख रावण छल-बल और माया का प्रयोग करने लगा। विफल होकर सुग्रीव राम के पास चला आया। राम ने कहा-सखे! आपने इतनी बड़ी भूल कैसे कर दी कि व्यूह से अकेले निकल पड़े और रावण तक पहुँच गये? सुग्रीव ने कहा-प्रभो! माता सीता का अपहरण करने वाले उस दुष्ट को देखते ही मैं अपने को रोक नहीं पाया। सुग्रीव पूर्ण नरेश हैं, सेना भी रही होगी। जामवन्त जैसे महान बुद्धिमान मंत्री, हनुमान जैसे पराक्रमी सेनानायक हैं। भगवान ने उसे शान्त करते हुए समझाया-वह मायावी है, अत: केवल बल का ही नहीं अपितु बुद्धि-कौशल का भी प्रयोग करना होगा। आपको व्यूह बद्ध होकर चलना चाहिए। इस प्रकार राम का लक्ष्य सुग्रीव को शौर्य सम्पन्न बनाना था, बालि को उसकी पशुता का बोध कराना था, विभीषण के माध्यम से शरणागति की रक्षा का बोध करना था। किसी को मारना राम का अभिष्ट नहीं था।

शूर्पणखा-विरूपण व ताड़का- कतिपय लोगों का आक्षेप है कि जिनके भाई लक्ष्मण ने शूर्पणखा, एक नारी का नाक-कान काट डाला, उन्हें हम अपना आराध्य नहीं मान सकते। शूर्पणखा का परिचय श्री रामचरित मानस में संत कवि गोस्वामी तुलसीदास जी ने दिया है-**'सूपनखा रावण कै बहिनी-दुष्ट हृदय दारून जस अहिनी।'** शूर्पणखा का पति युद्ध में रावण द्वारा मारा गया । रावण ने सांत्वना दी-''बहन! युद्ध के उन्माद में मैं पहचान नहीं पाया इसलिए वह मेरे हाथों मारा गया। हमारी जाति में भी कभी विधवा-सधवा होती है क्या? हजारों स्त्रियाँ हम रखते हैं। भाई खरदूषण के संरक्षण में रहकर जन स्थान में मनचाहा विचरण करो।'' दक्षिण भारत में खरदूषणादि की चौकियाँ इसलिए थी कि संस्कृति-संवाहक तपस्यारत ऋषि-मुनियों की तपस्या बन्द कराओ और उन्हें खा जाओ।

अस्थि समूह देखि रघुराया।
पूछी मुनिन्ह लागी अतिदाया।। 3/8/3

निसिचर निकर सकल मुनि खाये।
सुनि रघुवीर नयन जल छाये।। 3/8/4

ऋषियों के परामर्श के बाद राम चित्रकूट से पंचवटी की ओर आए। वहाँ तपोवन (अरण्य) ऐसे भी थे जिन पर इन निशाचरों का प्रभाव काम ही नहीं करता था, जैसे-महर्षि अत्रि, सरभंग, अगस्त्य इत्यादि। स्वच्छन्द विचरण के ही क्रम में शूर्पणखा एक बार पंचवटी की ओर आई। उसका आक्रामक रुख देखते ही राम ने संकेत किया, लक्ष्मण ने उसे विरूपित कर दिया। नाक-कान में खरोंच लगते ही वह छद्म वेश भूलकर वास्तविकता में आ गयी। वह राक्षसी दहाड़ने लगी। भ्राता खरदूषण को प्रोत्साहित किया। वे सब मारे गये। अन्ततः वह रावण के पास पहुँची, कहा-

करसि पान सोवसि दिन राती।
सुधि नहीं तव सिर पर आराती।। 3/20ख/4

तू मदिरा पीकर सोया है। तुझे ज्ञान नहीं है कि तुम्हारी सीमा पर शत्रु ने कदम रख दिया है। पत्नी की रक्षा करना पति का दायित्व है। राम ने उस दायित्व का निर्वाह किया। शूर्पणखा को अपने रूप सौंदर्य का बहुत गर्व था। राम ने उसका वास्तविक स्वरूप उद्‌घाटित कर दिया। अहिनी थी और अहिनी हो गई। पति की दशा में सन्तुष्ट रहना, उनका सहयोग करना, उनके अधूरे कार्यों को पूर्ण करना पतिव्रत है। नारियों का उत्कर्ष-अपकर्ष सामाजिक व्यवस्था की देन है, भगवान के यहाँ दोनों बराबर हैं।

पुरुष नपुंसक नारि वा जीव चराचर कोइ।
सर्ब भाव भज कपट तजि मोहि परमप्रिय सोइ।।
7/87

भगवान शिव अर्द्धनारीश्वर कहे जाते हैं। आधा नारी और आधा पुरुष बनकर परब्रह्म परमात्मा की सृष्टि में उत्पत्ति, पालन और परिवर्तन चलता ही रहता है। नारी और पुरुष सृष्टि में समान सहयोगी हैं। असुरों से पराभूत देवताओं को एक नारी ने ही विजय दिलाई थी। वह भी युद्ध करके। ताड़का नारी ही थी। उसमें एक हजार हाथियों का बल था। इन्द्र का बसाया हुआ करूप देश उसने उजाड़ कर उसे जंगल बना दिया था। उसके पुत्र मारीच और सुबाहु भी पराक्रमी थे। नारी सृष्टि में द्वितीय श्रेणी की नागरिक कभी न थी। मानवीय मर्यादा के अनुसार गृहस्थी का दायित्व नारी का है, अर्जन पुरुषों का। गृह-विभाग और संग्रह विभाग के रूप में कार्य विभाजन पूर्वजों द्वारा नियत मर्यादा है। एक बार विद्वान लोगों ने भगवान राम के समक्ष यज्ञ करने का प्रस्ताव रखा। भगवान ने स्वीकृति दे दी। विद्वानों ने कहा-फिर तो आपको विवाह करना होगा क्योंकि नारी के बिना यज्ञ सम्पन्न नहीं होता। यह उस समय का प्रस्ताव था जब सीता बाल्मीकि आश्रम में थी। एक पत्नीव्रत राम का आदर्श था। उन्होंने कहा-यदि ऐसा है तो मुझे यज्ञ नहीं करना है। विद्वानों ने उपाय बताया, सीता की स्वर्ण प्रतिमा बनाकर यज्ञ सम्पन्न हो सकता है। इस प्रकार पुष्कल, दान-दक्षिणा के साथ वह यज्ञ सम्पन्न हुआ किन्तु राम एक पत्नीव्रत ही रहे। यह पतिव्रत और पत्नीव्रत जैसी मर्यादाएँ स्त्री-पुरुष दोनों के लिये श्रीराम ने स्थापित की जो तब भी उचित था और आज भी है।

(क्रमशः)

जिसके पास मनोबल नहीं, उसके पास कुछ नहीं, यहाँतक कि मनुष्यता भी नहीं। मनुष्य तो सामान्य रूप से बड़ा क्षुद्र जीव होता है, एक मनुष्यता ही उसे महान बनाती है।

– भगवती प्रसाद वाजपेयी

कमाई

– ईश्वरसिंह ढीमा

- दो भाई थे, एक थे पुलिस में बड़े अफसर और दूसरे थे शिक्षक।
- पुलिस के बड़े अफसर ने बड़ी कमाई की थी उनके पास गाड़ी थी, बंगला था, समाज में बड़ा ठस्का था और शिक्षक भाई का मकान छोटा था। गाड़ी नहीं थी परन्तु वे ज्ञान के भण्डार थे। बौद्धिक जगत में उनके ज्ञान का सब लोहा मानते थे।
- प्राप्त भौतिक समृद्धि में उन्हें संतोष जनक रुचि थी। गाड़ी, बड़ा बंगला न होने का उन्हें कोई मलाल नहीं था। वे अपने जीवन से अति संतुष्ट थे।
- बड़े भाई अक्सर उन्हें ताना देते रहते थे-उसने जिन्दगी में आखिर किया क्या? जिन्दगी भर किताबों में चिपका रहा।
- शिक्षक श्री उस ताने को प्रेम से सुन लेते, कभी बड़े भाई के साथ उस बात को लेकर वाद-विवाद नहीं किया। बस मुस्कुरा कर रह जाते।
- एक दिन शिक्षक भाई को रेडियो स्टेशन वालों ने अपनी ज्ञान-सत्र में चर्चा के लिये बुलाया। वे जब रेडियो स्टेशन पहुँचे तो देखा बड़े भाई अपनी रूआब दार पुलिस वर्दी में वहीं गेट पर खड़े थे। छोटे भाई ने बड़े भाई को प्रणाम किया और वहीं गेट पर खड़े हो गए। अभी रिकॉर्डिंग में देर थी। बड़े भाई ने फिर पूछा-''किसमें आए हो?''
- छोटे भाई ने जवाब दिया-''सिटी बस में।''
- फिर रूआब से बोले-''मुझे कह देते मैं अपनी सीटी होण्डा में ले आता।''
- छोटे भाई ने विनय से उत्तर दिया-''जी शुक्रिया आदत खराब हो जाती है, मैं बस में ही ठीक हूँ।''
- बड़े भाई चूकने वाले नहीं थे उन्होंने तपाक से उलाहना दिया-''इसीलिए कहता हूँ, ट्यूशन करके दो रुपए कमा ले, ये किताबें पढ़ने से कुछ ना होगा। तुमने जिन्दगी में कमाया क्या है?''
- उसी समय राज्य के शिक्षा मंत्री की गाड़ी आकर गेट पर रुकी, दोनों भाई गेट के आमने-सामने खड़े थे। बड़े भाई मंत्री श्री के स्वागत और सुरक्षा के लिये वहाँ तैनात थे। मंत्री श्री का गाड़ी का दरवाजा खुला, फिर उतरते ही बड़े भाई ने मंत्री को खींच कर सलाम किया। मंत्री ने कोई खास तवज्जो नहीं दी परन्तु तभी उनकी नजर दूसरी तरफ खड़े छोटे भाई शिक्षक श्री पर पड़ी, उन्हें देखते ही उनकी बांछें खिल गई, वो दौड़कर आए और अपने गुरु के चरण छू लिए।
- छोटे भाई ने अपने बड़े भाई की ओर देखा जो दूसरी तरफ सावधान की मुद्रा में खड़े थे और आँखों ही आँखों में कहा-''देखो भाई मैंने ये कमाया है।''
- पुलिस वाले बड़े भाई की आँखें झुक गई।

●

बुराई में रस लेना बुरी बात है, अच्छाई को उतना ही रस लेकर उजागर न करना और भी बुरी बात है। सैंकड़ों घटनाएँ ऐसी घटती हैं, जिन्हें उजागर करने से लोक चित्त में अच्छाई के प्रति अच्छी भावना जगती है।

– डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी

विचार सरिता

(सप्रसप्रति लहरी)

– विचारक

शास्त्रों में जीवन के चार पुरुषार्थ कहे गये हैं। जिनमें परम पुरुषार्थ तो केवल मोक्ष को ही कहा गया है। मानव जीवन की प्राप्ति का मुख्य उद्देश्य ही स्वकल्याण है। जब तक जीवन में अमृत्व की उपलब्धि नहीं हुई तब तक चाहे त्रिलोकी का राज्य भी मिल जाए तो भी कुछ नहीं। अक्षय सुख के मुकाबले नश्वर पदार्थों की उपलब्धि का क्या महत्त्व कहा जा सकता है। चौथा पुरुषार्थ जो मोक्ष है उसके भी दो अंश हैं। प्रथम अंश में दु:खों की आत्यन्तिक निवृत्ति तथा दूसरे अंश में परमानन्द की प्राप्ति। यही मोक्ष का स्वरूप है यानी इसी को मोक्ष कहते हैं। इसके अतिरिक्त किसी वस्तु या अन्त:करण की किसी भी प्रकार की अवस्था का नाम मोक्ष नहीं है। मोक्ष का दूसरा अभिप्राय यह है कि अपना जो वास्तविक स्वरूप है उसे जानना अर्थात् उसका दृढ़ अपरोक्ष ब्रह्मज्ञान ही मोक्ष है। आत्माभिन्न एकता का नाम मोक्ष है। हमारा सभी का वास्तविक स्वरूप परमात्मा है और उस स्वरूपानुसंधान का अनुभव जिसको सतत् बना रहता है उसका नाम जीवन मुक्ति या मोक्ष कहा गया है।

परमात्मा के स्वरूप के बारे में यों तो दस विधेय विशेषण तथा दस निषेध विशेषण कहे गए हैं पर उन सब में नीचे वर्णित चार विशेषण मुख्यता लिये हुए हैं। यथा **सत्, चित्त, आनंद और एक।** इन चारों विशेषणों को ठीक से समझ लेने के बाद परमात्मक विषय में कोई शंका नहीं रहती। वह समस्त शंकाओं का उत्तर पा कर मौन हो जाता है, उसे ही मौनी या सन्यासी कहा जाता है।

सत् उसे कहते हैं जो निरन्तर रहे। जिसका काल करके अन्त न होता हो, देश करके जिसकी सीमा न हो, वस्तु करके जिसकी परिच्छिन्नता सिद्ध न होती हो, उसे ही सत् कहते हैं। यदि हम भूतकाल पर नजर डालें तो बुद्धि कुण्ठित हो जाती है कि भूतकाल की लम्बाई का कोई ओर-छोर ही नहीं आता। ऐसे ही भविष्यकाल की भी क्या गणना की जा सकती है, भूत की तरह भविष्य भी अब वर्तमान में जो नहीं है, उसकी मात्र कल्पना ही की जा सकती है। ऐसे जो अनन्त भूत व भविष्यकाल है उनमें तथा वर्तमान काल में यानी निरन्तर जो वस्तु एक जैसी ही उपस्थित रहे, किसी प्रकार से जिसका नाश या बाध न हो, उस वस्तु को सत् कहते हैं। गीता में भी भगवान आत्मा के सत् स्वरूप का वर्णन करते हुए अर्जुन को कहते हैं-

नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सत:।।2/16।।

अर्थात् असत् वस्तु का कोई अस्तित्व नहीं होता और सत् वस्तु का कभी अभाव नहीं होता।

जैसे सत् वैसे ही जो ज्ञान स्वरूप हो, प्रकाश स्वरूप हो उसे **चित्** कहते हैं। ज्ञान स्वरूप का अभिप्राय यह है कि जो भाव और अभाव को जानता है वह ज्ञान स्वरूप परमात्मा है। हमारी बुद्धि मायावी पदार्थों का तो ज्ञान कर सकती है परन्तु आत्मा का ज्ञान बुद्धि भी नहीं कर सकती परन्तु बुद्धि को भी जो जानता है वह हमारा चित् स्वरूप आत्मा ही है। बुद्धि कुण्ठित हो गयी, बुद्धि अल्प है, ऐसा बोध जिसको होता है वह हमारा ज्ञान स्वरूप आत्मा है। भूत भविष्य को जानना भी ज्ञान है और ये अनन्त हैं पूर्णतया जाने नहीं जाते ऐसा जो जानना है वह हमारे आत्मा के चित् रूप को सिद्ध करता है। चित् माने भाव-अभाव, जानने व नहीं जानने दोनों को जानने

वाला। जैसे खीर या सब्जी के अन्दर चीनी या नमक के होने और नहीं होने दोनों को जो जानता है, वैसे ही इन्द्रिय, मन, बुद्धि इन सबको जो जानता है तथा इतना ही नहीं इनकी प्रखरता से कार्य करने की शक्ति या इनकी मन्दता को जो भलीभाँति जानता है उस ऊर्जा का नाम चित् यानी अलुप्त प्रकाश अर्थात् ज्ञान स्वरूप आत्मा है।

जो सर्व दु:खों से रहित है उसको कहते हैं **आनन्द**। आनन्द हमारे स्वरूप का स्वभाव है। स्वभाव से यहाँ तात्पर्य यह है कि जिसमें सदैव आनन्द की मौजूदगी बनी रहे। जिसमें आनन्द का कभी अभाव होता ही नहीं ऐसा हमारा जो स्वरूप है, उसमें आनन्द की विद्यता सदैव बनी ही रहती है। जैसे ईख की पेरी (डंठल) को कोई भी, कहीं भी, किसी भी काल में चखता है तो उसका मीठा-पन हर परिस्थिति में बना ही रहता है। क्योंकि मीठास ईख के स्वभाव में है, ऐसे ही आनन्द हमारी आत्मा का मुख्य स्वभाव है।

प्राणीमात्र आनन्द में रहना चाहता है, दु:ख को कोई नहीं चाहता। पदार्थों में जो प्रियता है वह भी हमारे आनन्द स्वरूप का प्रतिबिम्ब मात्र है। पदार्थ में कोई प्रियता है ही नहीं, परन्तु हमारी वृत्ति जब बाहर निकल करके उस पदार्थ को घेर कर अपने में उतार लेती है और वहाँ जिस क्षण तक वृत्ति एकाग्र रहती है, उस काल तक उस वस्तु में आरोपित आनन्द हमें आनन्द का आभास करा देता है। मूल रूप से वृत्ति एकाग्र होने से वह आनन्द हमारे ही स्वरूप का आनन्द हमें परिलक्षित होता है। इससे यह सिद्ध होता है कि आनन्द हमारे स्वरूप के स्वभाव में है।

परमात्मा का चौथा महत्त्वपूर्ण विशेषण है **एक**। अर्थात् एक परमात्मा के अतिरिक्त दूसरे किसी पदार्थ या वस्तु का अस्तित्व नहीं है। श्रुति भी कहती है- **''एको ब्रह्म द्वितीय नास्ति।''** जब एक ब्रह्म ही है तो उसके अलावा दूसरा आया कहाँ से। ब्रह्म के अतिरिक्त किसी वस्तु की कल्पना की गई है तो वह हमारा भ्रान्तिजन्य ज्ञान है। यथार्थ बोध हो जाने पर भासित व अभासित सभी दृश्यजाल ब्रह्मविलास अनुभूत होता है। अयथार्थ ज्ञान के कारण ही रज्जु में सर्प, मरुभूमि में जलराशि व सीपी में रजत की प्रतीति व सत्यता का बोध रहता है। परन्तु उनके अधिष्ठान के यथार्थ ज्ञान के बाद न वहाँ सर्प होता है न मरुभूमि में जल तथा सीपी में रूपा। ऐसे ही जिनकी वृत्ति ब्रह्माकार हो गई है उनकी दृष्टि में देहादि प्रपञ्च की अलग से कोई सत्ता सिद्ध नहीं होती और एकमात्र ब्रह्मस्वरूप परमात्मा ही सिद्ध होता है। किसी श्रोत्रिय व ब्रह्मनिष्ठ सद्‌गुरु की शरण में जाकर वेदान्त का भली प्रकार श्रवण करके मनन व निदिध्यासन करने से आत्मज्ञान का प्रकाश जब हृदय में फैलता है तो अज्ञानरूपी निशा का स्वत: ही बाध हो जाता है और एकमात्र सच्चिदानन्दघन परमात्मा के अतिरिक्त सब दृश्यजाल का बाध हो जाता है।

कोई भी बड़ा काम रोशनी की हलचल में नहीं किया जाता। बड़े काम तो वे ही कर पाते हैं जो रोशनी से जरा अलग, गोधूलि मेंजरा छिपकर बैठते हैं। जाते शान-शौकत की दुनिया से दूर हैं और जो अपने कार्य के ध्यान में इस तन्मयता से लगे हुए हैं कि धन और मान की उन्हें याद ही नहीं आती।

– रामधारी सिंह दनकर

प्राचीन संस्कृति का वारिश सीमांत क्षेत्र बाड़मेर

– जुंजारसिंह, जानसिंह की बेरी

पश्चिमी राजस्थान का बाड़मेर जिला जो अन्तर्राष्ट्रीय सीमाओं का सजग प्रहरी है, वहीं पुरातात्विक ऐतिहासिक एवं समृद्ध संस्कृति की विरासत को भी अपने आँचल में समाए है। धार रेगिस्तान के प्रमुख अंग के रूप में यह मरुस्थलीय जिला आज अपने नयानाभिराम दर्शनीय स्थलों के कारण देशी-विदेशी पर्यटकों के आकर्षण का प्रमुख केन्द्र रहा है। दूर-दूर तक फैली इस जिले की सीमाओं के भीतर अनेक ऐसे पर्यटक स्थल हैं, जिन्हें देखकर दर्शक अभिभूत हो उठते हैं। जहाँ एक ओर किराडू के मंदिर स्थापत्य एवं शिल्पकला के बेजोड़ नमूने हैं, वहीं ऐतिहासिक जैन तीर्थ नाकोड़ा, रणछोड़ रायजी खेड़ व कलियुग की देवी माता-राणी भटियाणी मंदिर जसोल, धार्मिक दृष्टिकोण से अपनी विशिष्ट पहचान रखते हैं। इसके अतिरिक्त वीर दुर्गादास की कर्मभूमि के रूप में कनाना भी किसी तीर्थ स्थल से कम नहीं है।

-: किराड़ू :-

जिला मुख्यालय से 32 कि.मी. दूर हाथमा गाँव के पास ग्यारहवीं एवं बारहवीं शताब्दी के किराडू मंदिर आए हुए हैं। यहाँ पर सोमेश्वर, शिव, ब्रह्मा एवं विष्णु के पाँच मंदिर विद्यमान हैं। इन मंदिरों के सभा मंडपों, शिखरों तथा बाह्यपार्श्वों पर उत्कीर्ण मूर्तियों, घटपल्लवों, पत्रलताओं, गोवर्द्धन कीर्तिस्तम्भों पर गुप्त, परमार तथा सोलंकी युग की स्पष्ट छाप देखी जा सकती है। तीन ओर बनी ऊँची पहाड़ियों की तलहटी में बने इन मंदिरों के शिखर पर प्राचीन महाकाव्यों, पौराणिक गाथाओं, देवमूर्तियों, युद्धों और जनजीवन का चित्रण इस सूने आँचल में किसी अनुपम सौंदर्य लोक का सजीव सृजन करता प्रतीत होता है। यहाँ पर शर-शय्या पर लेटे भीष्म पितामह की दो प्रख्यात प्रतिमाएँ तक्षण-कला के उत्कृष्ट नमूने के रूप में पायी जाती हैं। स्त्री सौंदर्य, युद्ध क्रिया, जल भरती रमणियाँ एवं मंगल-गीतों को जिस कौशलता के साथ तराशा गया है, उससे आकृतियों के सजीव होने का भ्रम लगता है।

-: जूना :-

बाड़मेर मुनाबाव रेलमार्ग पर जसाई स्टेशन से करीब पाँच कि.मी. की दूरी पर दर्शनीय स्थल जूना स्थित है। यहाँ पर 12वीं एवं 13वीं शदी के शिलालेख एवं ध्वंस जैन मंदिर के स्तम्भ देखने को मिलते हैं। पहाड़ी पर एक प्राचीन किला विद्यमान है जिसकी परिधि करीब 15 कि.मी. क्षेत्र में है। पहाड़ों की अटल चट्टानों के बीच टापू के रूप में यह स्थान आया हुआ है। जिसके बीच में पीने के पानी का बड़ा कुआँ है। वि.सं. 1640 तक यही स्थान जूना बाड़मेर के नाम से जाना जाता था तथा औरंगजेब के समय में वि.सं. 1744 के लगभग यहाँ पर दुर्गादास राठौड़ का निवास था। ऐसा माना जाता है कि यहाँ से ही बिखरे लोगों ने ही बाड़मेर नगर का निर्माण किया है।

-: बाटाडू का कुआँ :-

जिले की बायतु तहसील की बाटाडू गाँम पंचायत में आधुनिक पाषाण कला से बने संगमरमर के दर्शनीय कुएँ को देखकर पर्यटक आवाक रह जाते हैं। इसके एक छोर से दूसरे छोर तक संगमरमर के पत्थर जुड़े हुए हैं। इन पर की गई धार्मिक युग की शिल्पकला को देखकर दर्शक प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता है।

-: कोटड़ा का किला :-

रेगिस्तान के आँचल में एक छोटी-सी भाखरी पर जैसलमेर के आकार का एक किला बाड़मेर जिले की शिव तहसील के कोटड़ा गाँव में बना हुआ है। यह भ कभी जैन सम्प्रदाय की विशाल नगरी था। किले की बुर्ज एवं निवास स्थान शिल्पकला के सौंदर्य को लिए हुए है। किले

का निर्माण किराडू के परमार शासकों के हाथों होना बताया जाता है। इसका निर्माण काल वि.सं. 1239 माना जा सकता है। इस किले में पीने के पानी का ''सरगला'' नामक कुआ भी है।

–: गढ़ सिवाणा :–

सिवाणा का दुर्ग इतिहास विख्यात रहा है। यह किला सिवाणा तहसील मुख्यालय पर ही एक ऊँची पहाड़ी पर बना हुआ है। इसका निर्माण पंवार राजा भोज के पुत्र वीर नारायण ने वि.सं. 1075 के लगभग करवाया था। राव मल्लिनाथ, जेतमाल, राव मालदेव, राव चंद्रसेन, उदयसिंह महाराज, जसवंतसिंह प्रथम, अजीतसिंह एवं अन्य इतिहास प्रसिद्ध पुरुषों का इस किले से सम्बन्ध रहा है। किले में पानी का बड़ा तालाब और निवास के महल जीर्ण-शिर्ण अवस्था में देखने को मिलते हैं। किले के मुख्य द्वार की विशालता योद्धाओं की विरोचित भावनाओं की मुँह बोलती तस्वीर है।

–: खेड़ मंदिर :–

उपखण्ड बालोतरा के निकट जोधपुर-बाड़मेर रेलमार्ग पर खेड़ मंदिर स्टेशन पर वैष्णव तीर्थ स्थान खेड़ आया हुआ है। अतीत काल में खेड़ राठौड़ राजपूतों की राजधानी थी। यह स्थान लूनी नदी के किनारे स्थित है। वर्तमान में यहाँ चार मंदिर हैं जिनमें एक मंदिर श्री रणछोड़राय जी का है। इसे आधुनिक रूप दिया गया है। अन्य मंदिर जीर्ण-शीर्ण अवस्था में हैं। माघ मास में रेबारी जाति के लोग विशेष रूप से पूजन करने आते हैं। वर्ष में दो बार, भादवा शुक्ल अष्टमी और कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा को यहाँ विशाल मेले लगते हैं।

–: नाकोड़ा :–

बालोतरा से ही 12 कि.मी. की दूरी पर जैन सम्प्रदाय का प्रसिद्ध तीर्थ नाकोड़ा अवस्थित है। इसे मेवानगर के नाम से भी जाना जाता है। मंदिर में पार्श्वनाथ एवं अधिष्ठायक के दर्शन करने हजारों की संख्या में श्रद्धालु आते हैं। तीन ओर से पहाड़ियों से घिरा यह स्थल अत्यन्त रमणीय है। यहाँ पर स्थापित महावीर स्वामी की मूर्ति वि.सं. 904 की है यहाँ पर प्रतिवर्ष पौष वदी 10 को श्री पार्श्वनाथ के जन्मोत्सव पर विशाल मेला भरता है। यह स्थान दूसरी शताब्दी का होना बताया जाता है। स्थापत्य कला की दृष्टि से यहाँ आदिनाथजी का मंदिर और शांतिनाथ के मंदिर के शिखर, विविध नृत्यों की मुद्राओं से युक्त देवपुतलिकाएँ, शान्तिनाथ जी मंदिर का तोरण, लक्ष्मी देवी की उत्कीर्ण मूर्ति, हंस पंक्ति आदि दर्शनीय हैं। इन मंदिरों की तुलना देलवाड़ा के जैन मंदिरों से की जा सकती है। यहाँ के जैन मंदिर अपनी विशालता और भव्यता में सत्य, अहिंसा और आत्मसंयम के कल्याणकारी संदेश देते हैं।

–: तिलवाड़ा :–

जोधपुर-बाड़मेर रेलमार्ग पर ही स्थित है तिलवाड़ा गाँव जहाँ इस क्षेत्र के लोक देवता राव मल्लिनाथ का मंदिर है। यहाँ प्रतिवर्ष चैत्र कृष्ण 7 से चैत्र शुक्ल 7 तक, 15 दिन तक लूनी नदी के तट पर भारत विख्यात पशु मेला लगता है। मेले के समय लूनी नदी के सूखे क्षेत्र में दो-चार हाथ खोदने से ही मीठा और स्वच्छ पानी निकल आता है। यहाँ बना मल्लिनाथ जी का मंदिर भक्तों के लिए श्रद्धा तथा लोक सिद्धियाँ प्राप्त करने का केन्द्र बिन्दु हैं।

–: कनाना :–

बालोतरा नगर से मात्र 18 कि.मी. दूरी पर ऐतिहासिक गाँव कनाना स्थित है। शौर्य, वीरता तथा देशभक्ति के प्रतीक रणबांकुरे राठौड़ दुर्गादास की इस पावन कर्मभूमि पर शीतला सप्तमी को हर वर्ष गेर मेला लगता है। इस मेले में आसपास के सैकड़ों गाँवों से रंग-बिरंगी पौशाकों में सजे-धजे गेर दल गाँव के मेला स्थल पर एकत्रित होते हैं और फिर गाँव के विशाल मेला प्रांगण में प्रारम्भ होता है यहाँ का प्रसिद्ध गेर नृत्य। कनाना का गेर नृत्य आज देश-विदेश में काफी प्रसिद्धि के झण्डे गाड़ चुका है। यहाँ एक प्राचीन रावला तथा कई छतरियाँ भी हैं। पर्यटन की दृष्टि से इसका विशेष महत्त्व है।

–: वीरातरा :–

जिले की चौहटन पंचायत समिति मुख्यालय से 7 कि.मी. दूर लाख के वृक्षों की सुरभि से आच्छादित पहाड़ों की घाटी में वीरातरा माता का मंदिर विद्यमान है। इसे 400 वर्ष पुराना बताया जाता है। सिंहारूढ माँ जगदम्बा की विशाल स्वर्ण प्रतिमा इस मंदिर की विशेषता है। प्रतिवर्ष माघ शुक्ल चौदस एवं भादवा शुक्ल चौदस को यहाँ मेले लगते हैं। जो पूरी रात्रि देवी के पूजन एवं मंत्रोच्चारण के साथ समाप्त होते हैं। यहाँ मंदिर के अलावा द्वादश पूजा स्थान, समाधि-स्थल, कुण्ड और यात्रियों के लिए विश्राम-स्थल भी बने हुए हैं।

–: कपालेश्वर :–

चौहटन में ही एक विकराल पहाड़ी के बीच में कपालेश्वर महादेव के 13वीं शताब्दी के देवालय आज भी उत्कृष्ट शिल्पकला लिए दृष्टिगोचर होते हैं। बताया जाता है कि पांडवों ने अपने अज्ञातवास का अन्तिम समय यहीं छिपकर बिताया था। अर्जुन के रथ के निशान यहाँ इस बात के साक्षी हैं। यहाँ तीन शिव मंदिरों के अवशेष विद्यमान हैं। कपालेश्वर से करीब डेढ कि.मी. दूर बिशन पागलिया नामक पवित्र स्थान है। जहाँ भगवान विष्णु के चरण-चिन्ह पूजे जाते हैं। इन स्थानों के आसपास में प्रतिवर्ष सोमवती अमावस्या को मेला भरता है। इसी प्रकार प्रत्येक बारहवें वर्ष में एक विशाल मेला भरता है जिसे कुम्भ मेले का लघु मरुस्थलीय रूप समझा जाता है। यहाँ के पहाड़ों पर चौदहवीं शताब्दी का एक दुर्ग भी मौजूद है।

–: माता राणी भटियाणी मंदिर, जसोल :–

बालोतरा से सड़क मार्ग द्वारा पाँच कि.मी. चलने पर पहाड़ी की तलहटी में बसा जसोल अपनी ऐतिहासिक विरासत को समेटे अपनी विशिष्ट पहचान बनाए हुए है। जसोल नगर को तीर्थों का स्तम्भ एवं देवरमणीय स्थल भी कहा जाता है। इस नगर के चारों ओर विख्यात एवं पर्यटकों को मोह लेने वाले पवित्र तीर्थ स्थल हैं। तीर्थराज जसोल में माता राणी भटियाणी का मंदिर है। जिसके आसपास कई वीर योद्धाओं की छत्रियाँ बनी हुई हैं। (भटियाणी जी के मंदिर के पीछे मावड़िया जीवग, बाँई तरफ राणावत राणीजी, श्री पदमसिंहजी, माधोसिंहजी व जालमसिंह की छत्रियाँ हैं तो दायीं ओर रजावत, राणीजी, देवड़ी जी, हिम्मतसिंह जी, जोरावरसिंह जी, कानसिंह जी, दौलतसिंह जी, मानसिंह जी, भगवानसिंह जी, किशोरसिंह जी, गणपतसिंह जी, लालसिंह जी, सवाईसिंह जी की छत्रियाँ हैं। मंदिर के पीछे भेरूंजी का मंदिर भी है।) जसोल की पहाड़ी पर बाबा धोरीनाथ जी का मंदिर, श्रीया देवी का मंदिर, गोगाजी का मंदिर, विश्वकर्मा जी का मंदिर, भैरूंजी का मंदिर, गणपति (ठाकुरजी) बालाजी का मंदिर आदि देवरमणीय स्थल जसोल गाँव में हैं। इस तीर्थ की पूर्व दिशा में ब्रह्मधाम आसोतरा संत श्री खेताराम जी महाराज का ध्यान स्थल। राजस्थान का दूसरा ब्रह्माजी का ब्रह्मधाम आसोतरा है। पश्चिम दिशा में तिलवाड़ा में मल्लिनाथ जी एवं राणी रूपादेवजी के दर्शनीय स्थल, शताब्दियों पुराना शोभायमान खेड़ मंदिर है। दक्षिण में तीर्थों का तीर्थ श्री नाकौड़ा जैन श्वेताम्बर मंदिर व उत्तर दिशा में बालोतरा का चोंच मंदिर, पचपदरा का महासती संत श्री भगवती बाई का आश्रम और धोरा नाड़ी बालाजी का पावन मंदिर है।

इन दर्शनीय स्थलों के अलावा शिव में गरीबनाथ जी का मंदिर, देवका का वैष्णव मंदिर व इसके अलावा बाड़मेर नगर में भी मंदिरों की भरमार है। जिसमें भाखरी पर प्राचीन जगदम्बा का मंदिर, पहाड़ियों के पास पार्श्वनाथ जैन मंदिर, नागणेची देवी, चारभुजा तथा अन्य कई मंदिर व ऐतिहासिक विरासतें पर्यटकों का मन मोह लेती हैं।

●

चरित्र से विशुद्ध हुआ ज्ञान, यदि अल्प भी है, तब भी वह महान फल देने वाला है।

– कुंद कुंद आचार्य

अपनी बात

श्री क्षत्रिय युवक संघ के संस्थापक पू. तनसिंहजी का जन्म 25 जनवरी सन् 1924 को उनके ननिहाल बेरसियाला (जिला-जैसलमेर) में हुआ था। 25 जनवरी, 2023 को उनके जन्म के 99 वर्ष पूरे होकर 100वाँ वर्ष, शताब्दी वर्ष प्रारम्भ हो रहा है। पूज्य श्री का जन्म दिवस प्रतिवर्ष हम स्थान-स्थान पर मनाते रहे हैं। इस बार भी स्थान-स्थान पर मनाया जायेगा। लेकिन शताब्दी वर्ष प्रारम्भ का विशेष कार्यक्रम उनके जन्म स्थान बेरसियाला में मनाना है। अपने-अपने स्थान पर भी प्रतिवर्ष की तरह सभी मनाएँगे। शताब्दी वर्ष में वर्ष भर जगह-जगह कार्यक्रम होते रहेंगे।

अत्यन्त साधारणता में उन्होंने अपना जीवन यापन किया। परन्तु वे असाधारण प्रतिभा के धनी थे। अपनी उस असाधारण तथा अद्भुत प्रतिभा का उपयोग उन्होंने कभी अपने व्यक्तिगत या पारिवारिक हित के लिये नहीं किया। उनकी प्रतिभा समाज हित में, साधना-मार्ग को सुगम बनाने में, भारतीय संस्कृति के पुनर्स्थापना में ही सदैव काम आई और इसी को उन्होंने प्रतिभा का सदुपयोग माना।

निष्काम भाव से लोक मंगल में कर्मरत रहकर गीता ज्ञान को अपने जीवन में साकार किया। साथ चलने वालों को उनका जीवन ही गीता ज्ञान दे रहा था। अपने साथ चलने वालों को अपने ही जैसा प्रतिभावान बनाने के प्रयास में कभी कमी नहीं आने दी। उन्हीं के मार्गदर्शन में संघ साधना पथ पर चल रहे साधक साथियों ने अपने जीवन में निखार का अनुभव किया। जिज्ञासु की जिज्ञासा शान्त करते रहे। जो कुण्ठायें लेकर आते उनकी कुण्ठाओं के घेरे को भी तोड़ने का प्रयास किया।

परिश्रम तो ऐसा कि दिन में 18-20 घण्टे तक भी काम करते देखा गया। ध्येय निष्ठता ऐसी कि जो किया वह केवल संघ के लिये किया। सातत्य युक्त लगन। त्याग और तपस्या। ऐसे ही तो अर्जित होती है क्षमताएँ। कर्मयोगी थे, तो भक्त भी थे। साहित्य साधक भी थे। अपने चिन्तन के अनुसार गद्य लेखक थे तो पद्य में भी माहिर थे। उनकी लिखी पुस्तकों से आज भी प्रेरणा लेकर साधक साधना में लगे हैं। उनके गीतों का एक-एक बोल प्रेरणा का स्रोत है।

संघ साधना व्यष्टि से समष्टि और समष्टि से परमेष्टि की यात्रा है। हम मानव हैं और हमारा लक्ष्य है ईश्वर प्राप्ति। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए लोग संन्यास लेते हैं, जंगल में चले जाते हैं और एकान्त साधना करते हैं। पूज्यश्री ने जो मार्ग दिया उसमें घर बार छोड़कर जाने की आवश्यकता नहीं। निष्कामता से हमारे सामाजिक दायित्वों को निभाकर समष्टि में लीन हों। समष्टि का जो कर्तव्य है, उसकी पालना निष्कामता से करने पर परमेष्टि तक पहुँच हो सकती है।

पू. तनसिंहजी सामाजिक संगठनकर्ता तो थे ही, अध्यात्म प्रेम से ओतप्रोत कर्मठ कार्यकता थे। दृढ निश्चय के साथ अग्रसर होते थे, तो गंभीर चिन्तन भी चलता था। मर्यादित रूप में पारिवारिक और सांसारिक दायित्व भी निभाया तो सुलझे हुए राजनीतिज्ञ भी थे। बचपन से ही अनेक प्रकार की समस्याओं से तपकर निखारित होते रहे तो संघ साधना में भी विरोध जैसी अनेक विपत्तियों में एक आदर्श जीवन की रचना की। संघ में पारिवारिक भाव सृजन कर संघ को एक आदर्श कुटुम्ब बनाने में ही जीवन लगाया।

पू. तनसिंहजी ने जीवन को सार्थक बनाने का एक साधना मार्ग हमको दिया है। उस साधना मार्ग श्री क्षत्रिय युवक संघ का परिचय ही पू. तनसिंहजी का परिचय है। शताब्दी वर्ष के कार्यक्रमों के माध्यम से उस परिचय को अधिक से अधिक प्रसारित कर लोगों को जोड़ने का कार्य तो करना ही है, स्वयं अपना आत्मावलोकन कर साधना मार्ग पर गति को भी तीव्र करना है। यही उनकी देन के प्रति हमारी कृतज्ञता प्रकट करना होगा।

श्री क्षत्रिय युवक संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक एवं श्री कला रायमलोत छात्रावास के व्यवस्थापक श्री हनवंत सिंह मवड़ी का प्रधानाचार्य के पद पर पदोन्नति होने पर हार्दिक शुभकामनाएं एवं उज्जवल भविष्य की मंगलकामनाएं

-: शुभेच्छू :-

ईश्वर सिंह पादरू, जालम सिंह पिपलून, मनोहर सिंह सिणेर द्वितीय, लक्ष्मण सिंह गुड़ानाल,
समुन्द्र सिंह बालियाना, खीम सिंह लापुंदड़ा, परमवीर सिंह ढेलाना, जितेन्द्र सिंह गोलिया,
बलवन्त सिंह दाखां, गोविंद सिंह धीरा, अर्जुन सिंह धनवा प्रथम, ईश्वर सिंह सिणेर, पदम सिंह भाउड़ा,
मोंटू सिंह भागवा, पर्वत सिंह ढीढस, गणपत सिंह गोलियां, भगवत सिंह पुत्र श्री हमीर सिंह विधायक सिवाना,
गोविंद सिंह गोलिया, तन सिंह सिवाना, नारायण सिंह सरपंच इंद्राणा, महेंद्र सिंह पादरड़ी
ईश्वर सिंह मीठा, मनोहर सिंह सिणेरख, छतर सिंह कुंडल, जयदीप सिंह बालियाना, विवेक सिंह सिणेर
बलवंत सिंह कोटड़ी, वीर सिंह इंद्राणा, सुरेंद्र सिंह भागवा, रिड़मल सिंह बेरसियाला,
भवानी सिंह बेरसियाला, पाबु सिंह करना, नरपत सिंह अजीत, कोज सिंह सिणेर, गोविंद सिंह मवड़ी
चन्दन सिंह थोब, वाग सिंह लोहिड़ी, सोम सिंह लोहिड़ी, छतर सिंह गोल सोढान, उम्मेद सिंह रेडाणा,
जेठू सिंह आबुगढ़, वीरम सिंह पादरड़ी कला, डूंगर सिंह चांदेसरा, थान सिंह ख़बडाला

श्री क्षत्रिय युवक संघ

76 वां संघ स्थापना दिवस

22 दिसम्बर, 2022

रामसिंह जी चारणीम, रतनसिंह जी खुडानिया, जुठसिंह जी करड़ा, शिवसिंह जी कालेवा, वनेसिंह जी राजोला, गोपालसिंह जी चारणीम, नीलमसिंह जी नोसर, बलवन्तसिंह जी नोसर, भगवतसिंह जी केसवना, मदनसिंह जी (गाँव देवड़ा) गोविन्दसिंह जी कतरोसन, महेन्द्रसिंह जी नोसर, जितेन्दरसिंह जी ईसरोल, महेन्द्रसिंह जी (मरठवा), गोपालसिंह जी भियाड़, छैलसिंह जी कुसालपूरा, मूलसिंह जी काठाड़ी गणपतसिंह जी नून, लक्ष्मनसिंह जी जेला, उदयसिंह जी सिणली जागीर

श्री क्षत्रिय युवक संघ की स्थापना के 76 वर्ष पूर्ण होने पर तनेराज शाखा हैदराबाद के स्वयं सेवको की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं

श्री क्षत्रिय युवक संघ

76 वां संघ स्थापना दिवस

22 दिसम्बर, 2022

रणजीतसिंह आलासन (जालोर), पाबुदानसिंह दौलतपुरा (नागोर), सुरेन्द्र सिंह दौलतपुरा (नागोर), दलपतसिंह डभाल (जालोर), तेजपालसिंह जाखड़ी (जालोर), गोविंदसिंह डाभड़ (बाड़मेर) शंभूसिंह धीरा (बाड़मेर), नेपालसिँह गोळा (बनासकांठा), नेतसिंह चाबा (जोधपुर), कीर्तिपाल सिंह झाब (जालौर), पृथ्वीसिंह शिवकर (बाड़मेर), माधुसिंह तलेटा (सिरोही), पुरणसिंह आमेट (राजसमंद), जेठूसिंह आकोली (जालोर), ईश्वरसिंह जागसा (बाड़मेर), नरेंद्र सिंह देलदर (सिरोही), दलपतसिंह चांदेसरा (बाड़मेर), जोगसिंह सिनली (जोधपुर), रायपालसिंह सरली (बाड़मेर), जसपालसिंह करड़ा (जालोर), मनोहरसिंह टुआ (सिरोही), सुरेन्द्र सिंह पिपलाज (अजमेर), समन्दर सिंह बालियाना (बाड़मेर), जसवंत सिंह नागानी (सिरोही)

श्री क्षत्रिय युवक संघ की स्थापना के 76 वर्ष पूर्ण होने पर मुंबई प्रांत के स्वयं सेवको की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं

जनवरी, सन् 2023
वर्ष : 60, अंक : 01

समाचार पत्र पंजी.संख्या R.N.7127/60
डाक पंजीयन संख्या - Jaipur City /411/2023-25

संघशक्ति

ए-8, तारानगर, झोटवाड़ा,
जयपुर-302012
दूरभाष : 0141-2466353

E-mail : sanghshakti@gmail.com
Website : www.shrikys.org

श्रीमान् ....

....

....

स्वत्वाधिकारी श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास के लिये, मुद्रक व प्रकाशक, लक्ष्मणसिंह द्वारा ए-8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर से : गजेन्द्र प्रिन्टर्स, जेन मन्दिर सांगाकान, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर फोन : 2313462 में मुद्रित। सम्पादक-लक्ष्मणसिंह